हयाते आला हज़रत

मौलाना मोहम्मद शहाबुद्दीन रज़वी

रज़ा एकेडमी मुंबई-3

سلسلۂ اشاعت ۳۶۶

1

بسم اللہ الرّحمٰن الرّحیم

हयात आला हज़रत

मौलाना मोहम्मद शहाबुद्दीन रज़वी

जुमला हकूक किताब 1860ई० ऐक्ट हुकूमत हन्द के तहित जन सेवा ट्रस्ट के लिये महफूज़ हैं।

☆☆☆☆☆☆☆☆

नाम किताब--------------हयाते आला हज़रत
लेखक--------------------मौलाना मोहम्मद शहाबुद्दीन रज़वी
सफहात-----------------80
इशाअत-----------------ग्यारह सौ, इशाअते अव्वल
सन् तबाअत-------------अप्रेल/2004/ सफर 1424हि०
नाशिर---------------------शाह बरकतुल्लाह एकेडमी बरेली
कम्प्यूटर डिज़ाईनिंग------अतीक अहमद हशमती (शुजा मलिक)

हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी में इस्लामिक पुस्तकें

शाह बरकतुल्लाह एकेडमी

पता
रज़ा नगर सौदागरान बरेली शरीफ़, यू०पी०
फोनः- 0581,2552278-2550087

पेश लफ़्ज़

आला हजरत इमाम अहमद रजा कादरी फाज़िले बरेलवी की शख्सियत अब मौजूदा दौर के लिए मोहताज-ए-तअर्रुफ नहीं रह गई है। उनकी इलमी, दीनी और फिकरी खिदमात की धूम पूरे जहान में मची हुई है। आप की सब से बड़ी खूबी यह है कि आप ने मुसलमानों की जहाँ मज़हबी रहनुमाई की वहीं सियासी और फिकरी रहनुमाई भी की। और यह कोशिश रही कि उम्मत-ए-मुसलिमा मआशी और इकतिसादी तौर पर मज़बूत हो, और सियात को भी मकरो फरेब से दागदार होने न दें। उन्हों ने अपने जमाने में चलने वाली बहुत सी तहरीकात का बाईकाट किया, और कुछ तहरीकों को परवान चढ़ाया। हाँ वह हर उस चीज के मुखालिफ थे जो शरीयते इस्लामिया के खिलाफ़ हो। यही उनकी आला काबलियत थी।

ज़ेरे नज़र किताब इस्लामी इस्कॉलर और मुहक्किक हजरत मौलाना मौ० शहाबुदीन रजवी एडीटर महनामा सुन्नी दुनिया की है। मौसूफ की अब तक एक दर्जन से जाइद किताबें मन्ज़रे आम पर आ चुकी हैं। मौलाना तहरीरी सलाहिय्यतों के साथ ही साथ सियासी और फिकरी सलाहिय्यतों में यगाना हैं। मौलाना को मैं बहुत करीब से जानता हूँ इनकी हर तहरीक उम्मते मुहम्मदिया ﷺ और इस्लामियाने हिन्द की उरूज व तरक्की के लिये होती है। मौलाना में तन्ज़ीमी और इदारह साजी की भरपूर सलाहिय्यत मौजूद है, अगर उनकी फिकरी और अमली सलाहिय्यतों का सहीह तौर पर स्तेमाल किया जाए तो मुल्क में इन्किलाब बरपा हो सकता है। अल्लाह तआला मौसूफ से दीन की ज्यादा से ज्यादा खिदमत ले। आमीन

अताउर्रहमान
(वज़ीरे मुमलिकत बराये मेहनत हुकूमत उत्तर प्रदेश)
6.जनवरी 2004ई०

हयात-ए-इमाम अहमद रज़ा
माह व साल के आईने में

1- विलादत बा सआदत मोहल्ला जसोली, बरेली, यू०पी०, भारत
10/शव्वाल 1272/हि० 23/जून 1856/ई०

2- खत्मे कुरआन करीम बउम्र चार साल
बउम्र (चार साल) 1276/हि० 1860ई०

3- पहली तकरीर बउम्र 6 साल (मीलाद रसूले मकबूल)
रबीअल अव्वल 1278/हि० 1861ई०

4- पहली अरबी तसनीफ़ शरहे हिदायतुन्नौह
1285हि० 1868ई०

5- तस्तारे फ़ज़ीलत (बउम्र 8 साल)
शाबान/1286हि० 1869ई० (बउम्र 13साल 10माह 5दिन)

6- आगाज़ फ़तवा नवेसी बउम्र 13 साल 10 माह
14 शाबान 1286हि० 1869ई०

7- आगाज़ दर्स व तदरेस
1286हि० 1869ई०

8- अज्दे वाजी ज़िन्दगी
(बउम्र 18 साल) 1291हि० 1874ई०

9-फरज़न्दे अकबर मौलाना हामिद रज़ा खाँ की विलादत
रबीउल अव्वल 1292हि० 1875ई०

10-फतवा नवेसी की मुतलक इजाज़त
1292हि० 1876ई०

11- बैअत व ख़िलाफत बउम्र 21 साल
1292हि० 1877ई०

12- पहली उरदू तसनीफ
1294हि० 1877ई०

13- पहला हज और जियारत हरमैन व शरीफैन
1295हि० 1878ई०

14- शैख़ अहमद बिन ज़ीन बिन इलान मक्की से इजाज़त व ख़िलाफत
1295हि० 1878ई०

15- मुफ्तीये मक्का शैख़ अब्दुर्रहमान सिराज मक्की से इजाज़ते हदीस
1295हि० 1878ई०

16- शैख़ आबिदुन्नबदी के तलमीजे रशीद इमामे कावा शैख़ हुसैन बिन स्वालेह जमलुल्लैल मक्की से इजाज़ते हदीस
1295हि० 1878ई०

17- इमाम अहमद रजा की पेशानी में शैख़ा मौसूफ का मुशाहिद-ए-अनवारे इलाहिया
1295हि० 1878ई०

18- मस्जिदे हनीफ (मक्का मुअज़्ज़मा) में बशारते मग़फिरत
1295हि० 1878ई०

19- ज़मान-ए-हाल के यहुद व नसारा की औरतों से निकाह के अदमे जवाज़ का फतवा
1294हि० 1881ई०

20- तहरीक तरके गाऊ कशी का सद्दे बाब
1298हि० 1881ई०

21- पहली फरसी तसनीफ
1299हि० 1882ई०

22- उरदू शायरी का श्रंगार क़सीद-ए-मेराजिया की तसनीफ
क़ब्ल 1303हि० 1885ई०

23- फरज़न्दे असग़र मुफ्ती-ए-आज़म मोहम्मद मुस्तफा रज़ा खाँ की विलादत

22/ज़िलहिज्जा 1310हि० 1892ई०

24- नदवतुल उलमा के जलस-ए-तामीस (कानपुर) में शिरकत

1311हि० 1893ई०

25- तहरीक नदवा से अलैहिदगी

1315हि० 1897ई०

26- मक़ारि पर औरतों के जाने की मुमानिअत में फ़ाज़िलाना तहक़ीक़

1316हि० 1897ई०

27- क़सीद-ए-अरबिया अमालुल अबरार अल आलामुल अशरार

1318हि० 1900ई०

28- नदवतुल उलमा के ख़िलाफ़ हफ्त रोज़ा इजलास पटना में शिरकत

रजब 1318हि० 1900ई०

29- उलमा-ए-हिन्द की तरफ से ख़िताब मुजद्दिद मात-ए-हाज़िरह

1318हि० 1900ई०

30- तासीस मन्ज़िरे इस्लाम बरेली

1322हि० 1904ई०

31- दूसरा हज और ज़ियारत हरमनै शरीफैन

1322हि० 1905ई०

32- इमाम काबा शैख़ अब्दुल्लाह मीर दाद और उनके उस्ताद हामिद अहमद मोहम्मद जद्दादी मक्की का मुश्तरका इस्तफता और अहमद रजा का फाज़िलाना जवाब

1323हि० 1906ई०

33-उलमा-ए-मक्का मुकर्रमा और मदीना मुनव्वरह के नाम सनदाते इजाज़त नामा व ख़िलाफत

1324हि० 1906ई०

24-कराची आमद और मौलाना मोहम्मद अब्दुल करीम दरसे सिन्धी से मुलाकात

1324हि० 1906ई०

35- अहमद रजा के अरबी फतवे को हाफ़िज़ कुतुबुल हरम सय्यद इस्माईल ख़लील मक्की का ज़बरदस्त ख़िराजे अक़ीदत

1325हि० 1907ई०

36- शैख़ हिदायतुल्लाह बिन मोहम्मद बिन मोहम्मद सईद अल सिन्धी मुहाजिर मदनी का एतराफ-ए- मुजद्दिदयत

14/ रबीउल अव्वल 1320हि० 1012ई०

37- कुरआन-ए- करीम का उरदू तरजमा कनजुल ईमान फी तरजेमतुल कुरआन

1320हि० 1912ई०

38- शैख़ मूसा अली अश्शामी अल अज़हरी की तरफ से ख़िताब ''इमामुल अइम्मा अलमुजद्दिद अल हिन्दिलइमा''

एक रबीउल अव्वल 1320हि० 1912ई०

39- हाफिज़ कुतुल हरम सय्यद इस्माईल ख़लील मक्की की तरफ से ख़िताब ''ख़ातिमुल फुक़हा वलमुहद्दिसेसीन''

1320हि० 1912ई०

40- इलमुल मरबआत में डा० सर ज़ियाउद्दीन के मतबूआ सवाल का फाज़िलाना जवाब

क़ब्ल 1331हि० 1913ई०

41- मिल्लते इस्लामियां के लिये इस्लाही और इन्क़लाबी प्रोग्राम का एलान

1331हि० 1913ई०

42- बहादुल पुर हाई कोर्ट के जस्टिस मोहम्मद दीन का इस्तफता और अहमद रजा फाज़िलाना जवाब

23/रमज़ानुल मुबारक 1331हि० 1913ई०

43- मस्जिद कानपुर के क़ज़िये पर बरतानवी हुकूमत से मुआहिदा करने वालों के ख़िलाफ़ नाकिदाना रिसाला

1331हि० 1913ई०

44- डा० सर ज़ियाउद्दीन (वाइस चाँसलर मुस्लिम यूनिवरसिटी अलीगढ़) की आमद और इस्तिफादा-ए-इलमी

1334हि० 1916ई०

45- अंग्रेजी अदालत में जाने से इनकार और हाजिरी से इस्तिसना

1334हि० 1916ई०

46-सदर अस्सुदूर सूबाजात दकन के नाम इरशाद नामा

1334हि० 1916ई०

47-तामीस जमाअत रजा-ए- मुस्तफा बरेली

तकरीबन 1336हि० 1917ई०

48- सजद-ए-ताज़ीमी की हुरमत पर फ़रज़िलाना तहक़ीक़

1337हि० 1918ई०

49- अमेरिकी हयातदान पर प्रोफेसर अलबर्ट पोर्टा को शिकस्ते फ़ाश

1338हि० 1919ई०

50- आइज़क न्योटन और आइन सटाइन के नज़रयात के ख़िलाफ़ फ़ाज़िलाना तहक़ीक़

1338हि० 1920ई०

51- रद्दे हरकते ज़मीन पर 105 दलाइल और फ़ाज़िलाना तहक़ीक़

1338हि० 1920ई०

52- फ़िलासफे क़दीमा का रद्दे तबलीग़

1338हि० 1921ई०

53- दो क़ौमी नज़रयात पर हरफ़े आख़िर

1339हि० 1921ई०

54- तहरीक-ए-ख़िलफ़त का अफ़शा-ए-राज़

1339हि० 1921ई०

55- तहरीक-ए-तरके सवालात का अफ़शा-ए-राज़

1331हि० 1921ई०

56- अंग्रेजों की मुआविनत और हिमायत के इलज़ाम के ख़िलाफ़ तारीख़ी बयान

1331हि० 1921ई०

57- विसाल

25/ सफ़रूल मुज़फ़्फर 1340हि० 28/ अक्टूबर 1921ई०

58- मुदीर पैसा अख़बार का ताज़ीती नोट

एक रबीउल अव्वल 1340हि० 3/नवम्बर 1921ई०

59- सिन्ध के अदीबे शहीर हम्बली ततवी का ताज़ीती मक़ाला

1341हि० सितम्बर 1922ई०

60- मुम्बई हाई कोर्ट के जस्टिस डी० एफ० मुल्ला का ख़िराज़े अक़ीदत

1391हि० 1930ई

61- आला हज़रत के जानशीन अल्लामा मुफ्ती अख्तर रज़ा खाँ अज़हरी

मौजूद हैं

ख़ानदान-ए-आला हज़रत

आला हज़रत इमाम-ए-अहले सुन्नत मुजददिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह अलहाज अहमद रज़ा ख़ाँ बरेलवी का ख़ानदान क़न्धार अफ़ग़ानिस्तान से मुग़लिया दौर में हिन्दुस्तान आया, आपका तारीख़ी सिलसिला-ए-ख़ानदान इस तरह है।

इमाम अहमद रज़ा बिन (पुत्र)
हज़रत मौलाना नक़ी अली ख़ाँ (बिन)
हज़रत मौलाना रज़ा अली ख़ाँ (बिन)
हज़रत मौलाना क़ाज़िम अली ख़ाँ (बिन)
हज़रत मौलाना मोहम्मद आज़म ख़ाँ (बिन)
हज़रत मौलाना मुहम्मद सआदत यार ख़ाँ (बिन)
हज़रत मौलाना सईद उल्ला ख़ाँ

(रहमतुल्लाह अलैहिम)

1-मौलाना सईदुल्लाह ख़ाँ

आप क़न्धार से सलतनते मुग़लिया के दौर में हिन्दुस्तान तशरीफ लाये और बड़े ओहदों पर रहे लाहौर का शीश महल आप ही की जागीर में था, फिर वहाँ से आप दिल्ली तशरीफ लाये। उस वक्त आप शश हज़ारी ओहदे पर थे। दरबारे शाही से आपको ''शुजाअत-ए-जंग'' का ख़िताब मिला।

2-मौलाना मुहम्मद सआदत यार ख़ाँ

आपको हुकूमते मुग़लिया ने एक जंगी मुहिम सर करने

के लिये ''रोहेल खन्ड'' भेजा, फतह होने के बाद आपको बरेली का सूबेदार बनाने के लिये फरमाने शाही आया, लेकिन आप बिस्तरे-ए-विसाल पर आराम फरमा थे।

3-हज़रत मौलाना शाह मोहम्मद आज़म ख़ाँ

आप एक बहुत बड़े ओहदे पर नियुक्त थे; जो एक हज़ार रूपये माहवार से कम न था, बरेली तशरीफ लाये और तारिक-ए-दुनिया (दुनिया से अलग) होकर मोहल्ला मेमरान में शहज़ादा का तकिया जो आपके नाम से मशहूर है वहीं क़याम फरमया और वहीं आपका मजार है, आपका कामिल औलिया एकराम में से थे। यहाँ एक करामत बयान करता हूँ।

आपके साहबज़ादे हर जुमेरात को सलाम करने हाज़िर हुआ करते थे। एक बार जाड़े के मौसम में हाज़िर हुए तो देखा शाह साहब इस मौसम में अंगीठी के सामने तशरीफ फरमां हैं। और जिस्म पर सरमाई पोशाक नहीं तो फौरन अपनी क़ीमती चादर उतार कर अपने वालिदो माजिद के कन्धे पर डाल दिया, शाह साहब ने उसे उतार कर घाड़े में डाल दिया आपके साहब ज़ादे के दिल में ख़्याल पैदा हुआ काश जलाने से किसी और को अता फरमा दिया जाता। इधर दिल में ख़्याल पैदा हुआ उधर शाह साहब ने उस आग के भड़कते हुए घाड़े में से चादर खींच कर फेक दी और फरमाया ''फकीर के यहाँ धुकर पुकर का काम नहीं ले अपनी चादर'' जब देखा तो उस पर आग ने कुछ असर नहीं किया था।

4-हाफ़िज़ काज़िम अली ख़ाँ

आप शहर बदायूँ के तहसीलदार थे। उस ज़माने में यह

ओहदा आज कल के डी० एम० के बराबर था। दो सौ सवारों की बटालियन (फौज) आपकी ख़िदमत में रहा करती थी आपको आठ गाँव मौरूसी जागीर में मिले थे।

5–मुजाहिदे जंगे आजादी हज़रत मौलाना रज़ा अली खाँ

आप अपने ज़माने के बे मिसाल आलिम और वली-ए-कामिल गुजरे हैं। आला हज़रत के ख़ानदान में आप ही के वक्त से हुक्मरानी का रंग खत्म कर फ़क़ीरों का रंग चढ़ा, आपके पहले बुज़ुर्गों का ये आलम था कि शुरू में अमीरे-ए-सलतनत के ओहदों पर रहे और फ़िर अलग होकर इबादत व रियाज़त में मशगूल हुए लेकिन मौलाना रज़ा अली खाँ पर यह सिलसिला ख़त्म हो गया और आपने दुनियावी कोई ओहदा इख़्तियार नहीं फ़रमाया। आप तसव्वुफ़ में कामिल और बहुत अच्छे मुक़र्रिर भी थे आप अपने वक़्त के कुतुब थे। आप से बहुत सी करामत ज़ाहिर हुई।

(1) करामत

आप एक बार होली के त्योहार पर बाज़ार से गुजर रहे थे। एक ग़ैर मुस्लिम बाज़ारी तवाइफ़ ने आप पर रंग डाल दिया एक जोशीले नौजवान ने ऊपर जाकर मारना चाहा। आपने फ़रमाया इसे क्यों मारते हो इसने मुझ पर रंग छोड़ा है अल्लाह इसे रंग देगा। इतना जुबान-ए-मुबारक से निकलना था कि वह तवाअफ़ फ़ौरन क़दमों पर गिर गई ओर माफ़ी मांगी, मुसलमान हो गई आपने वहीं उस नौजवान से उसका निकाह कर दिया।

(2) करामत

एक साहब आये ओर कुछ क़र्ज मांगा फ़रमाया देख बेजा ख़र्च मत करना। वह साहब आज़ाद मिजाज़ थे, रक़म लेकर तवाइफ़ के यहां गये देखा कि हज़रत की छड़ी और छतरी रखी उलटे पाव वापस हुए। दूसरी के यहां गये वहां भी यही हाल। तीसरी के यहां गये वहां भी यही हाल देख़कर परेशान होकर हाज़िरे-ए-ख़िदमत हुए और सच्चे दिल से तोबा कर ली।

(3) करामत

एक बार बरेली में सूख़ा पड़ा पानी नहीं बरस रहा था। मुसलमानें ने हाज़िरे ख़िदमत होकर अर्ज़ की। आपने फ़रमाया मेरे साथ चलो एक ख़लके ख़ुदा यानि भीड़ आपके पीछे पीछे थी। बाजार से गुज़रे ग़ैर मुस्लिमों ने ताने से कहा देखना कि आप पानी बरसा कर ही लौटेगें। जब ईदगाह पहुँचे दो नफ़िल पढ़े दुआ मागीं दुआ ख़त्म न हुई थी कि पानी बरसने लगा।

6–मौलाना नक़ी अली खाँ साहब

आपने अपने वालिद साहब से उलूमे दीनी ज़ाहिरी और बातिनी हासिल किया आप एक वलिये कामिल और आरिफ़े बिल्लाह और मुसतजाबुददावात (जिसकी दुआ जरूर क़बूल हो) थे। आपसे भी बहुत सी करामतें ज़ाहिर हुईं। तफसीली हालात के लिये देखिये लेखक की किताब ''मौलाना नकी अली खाँ बरेलवी''

आला हज़रत की पैदाइश

आला हज़रत इमामे अहले सुन्नत मुजददिद-ए-दीनो मिल्लत मुहम्मद अहमद रज़ा ख़ाँ फ़ाज़िले बरेलवी की पैदाइश मोहल्ला जसोली में 1272 हिजरी 10 शव्वाल-ए-मुअज़्ज़म बरोज़ पीर वक्त ज़ुहर मुताबिक़ 17 जून 1856 में हुई। आपको बहुत सारे नाम व ख़िताबात से याद फ़रमाया जाता है। आपका पैदाइशी नाम "मुहम्मद" आपकी वालिदा माजिदा मोहब्बत में "अम्मन मियां" फ़रमाती थीं। वालिद-ए-माजिद "अहमद मियाँ" के नाम से याद फ़रमाते। आपके दादा ने आपका नाम "अहमद रज़ा" रखा, और आपका तारीख़ी नाम "अलमुख़्तार" है। और खुद (आला हज़रत रदियल्लाहु तआला अन्हु) "अब्द-ए-मुस्तुफ़ा" अपने नाम के पहले लिखा करते। आपने अपना सन पैदाइश इस आयते करीमा से निकाली।

اولٓئك كتب فی قلو بهم الايمان وايدهم بروح منه

तर्जुमा "ये वह लोग हैं जिनके दिलों में अल्लाह तआला ने ईमान नक़्श फ़रमा दिया और अपनी तरफ़ की रूह से उन की मदद फ़रमाई"

एक अजीब बिशारत क़ब्ल-ए-पैदाइश

आप के वालिद-ए-माजिद हज़रत मौलाना नक़ी अली ख़ाँ साहब ने एक अजीब ख़्वाब देखा, आपने अपने वालिद साहब मौलाना रज़ा अली ख़ाँ से बयान किया! आपने इरशाद

फ़रमाया ख़्वाब मुबारक है। बिशारत है कि अल्लाह तआला तुम्हारी पुश्त से एक फ़रजन्द अता फ़रमायेगा। जो बड़ा होकर इल्म का दरिया बहायेगा।

बुज़ुर्गों की पेशनगोई

जब आला हज़रत रदियल्लाहु तआला अन्हु पैदा हुए तो आप के वालिद साहब आप को लेकर मौलाना रज़ा अली ख़ाँ साहब की ख़िदमत में हाज़िर हुए। मौलाना ने देख कर गोद में लिया और फ़रमाया "ये मेरा बेटा बड़ा आलिम होगा"।

आला हज़रत रदियल्लाहु तआला अन्हु की बड़ी बहन फ़रमाया करती थीं कि बचपन से ही ये तमाम ख़ानदान में अपने मिजाज़ और ज़िहनियत की वजह से अलग नज़र आया करते। एक मरतबा किसी ने दरवाज़े पर सदा दी उस वक्त आपकी उम्र नौ दस साल की थी। आप बाहर तशरीफ़ ले गये देखा एक बुज़ुर्ग फ़कीर खड़े हैं। उन्होंने आला हज़रत को देखते ही कहा इधर आओ, ये कहकर सर पर हाथ फेरा और फ़रमाया "तुम बड़े आलिम हो।"

बचपन के हालात

आला हज़रत रदियल्लाहु तआला अन्हु बचपन ही से तक़वा व तहारत, इत्तेबा-ए-सुन्नत (सुन्नत की पाबन्दी), अख़लाक़ और हुस्ने सीरत के औसाफ़ सब कुछ शरीयत के हिसाब से बन चुके थे यहाँ ये वाक़िया समझाने

के लिये काफ़ी होगा।

तकरीबन साढ़े तीन साल की उम्र थी कि सिर्फ एक नीचा कुर्ता पहने हुए बाहर दौलत खाने की तरफ तशरीफ ले जा रहे थे कि सड़क पर एक गाड़ी में कुछ तवाइफें बैठी हुई किसी रईस की तकरीब में गाने बजाने के लिये जा रही थीं। उनका सामना होते ही फौरन आप ने अपने कुर्ते का दामन उठाकर आँखों पर रख लिया, ये वाकिया देख कर वह तवाइफें हँसने लगी फिर उनमें से एक बोली "वाह मियां साहिबजादे आँखों को छुपा लिया और सतर खोल दी"। आपने जवाब दिया कि "जब नजर बहिकती है तब दिल बहिकता है और जब दिल बहिकता है तब सतर बहिकती है"। ये जवाब सुनकर वह सकते के आलम में हो गई।

आपके इस मुबारक अमल और हैरत अंगेज जवाब के पेशेनजर ये सवाल पैदा होता है कि जब आप इतनी नन्ही सी उम्र में इस कद्र शऊर रखते थे तो फिर दामन के बजाए आप ने अपनी आँखों पर हाथ ही क्यों न रख लिया ताकि आँखें छुप जायें और इस से परदा भी होता और मकसद भी हल होता। थोड़ी ही सी तवज्जोह पर इसका जवाब भी मिल जाता है। अगर आप हाथ से आँखें छुपा लेते तो तवाइफ का मसखरा आमेज सवाल न होता और न उसका नसीहत आमेज जवाब मिलता, आपका हर काम मिन जानिबे अल्लाह होता था जोकि इस नन्हें से बच्चे की इस नन्ही अदा में पोशीदा है।

आला हज़रत के बचपन के जमाने में जो मौलवी साहब आपको पढ़ाया करते थे एक दिन बच्चों ने उनको सलाम किया। मौलवी साहब ने जवाब में कहा जीते रहो। इस पर आला

हज़रत ने फरमाया "मौलवी साहब यह तो सलाम का जवाब न हुआ जवाब तो वालेकुम अस्सलाम है" तब मौलवी साहब यह सुन कर बहुत खुश हुए और आपको बहुत ही दुआएं दीं। आप हमेशा शरीयत के पाबन्द रहे और कोई गैर शरई बात कभी मुँह से नहीं निकाली और न सुनी आप बचपन से ही कभी भी कोई बात खिलाफे-ए-शरीयत नहीं निकालते।

एक मौलवी साहब आला हज़रत को कुरआन शरीफ पढ़ाया करते थे। एक रोज वह मौलाना साहब किसी आयत-ए-करीमा में बार बार एक लफ्ज बताते मगर वह लफ्ज आपकी जुबान से नहीं निकलता। वह जबर बताते थे और आला हज़रत जेर पढ़ते। ये कैफियत देखकर आप के दादा ने उन्हें अपने पास बुलाया और कलाम पाक का वह नुस्खा मंगाकर देखा तो उसमें कातिब से एराब की गल्ती हो गई थी। और जिसकी छपाई में तसहीह न हो सकी थी, आपके दादा ने उसकी तसहीह फरमादी और पूछा जिस तरह मौलवी साहब बताते थे उस तरह क्यों नहीं पढ़ते थे। फरमाया मैं इरादा करता था मगर मेरी जुबान पर काबू न था सुबहान अल्लाह ये था आप का इल्म। आप ने चार साल की उम्र में कुरआन मजीद नाजरा पढ़ लिया था।

आला हज़रत अपने तालिबे इल्मी के जमाने में उसूले-ए-फिकाह की मशहूर किताब "मुसल्लिमुस्सुबूत" का मुताअला फरमा रहे थे, आपके वालिद साहब का तहरीर किया हुआ एतराज व जवाब नजर से गुजरा आपने किताब के हाशिए पर अपना मजमून तहरीर फरमाया, जिसमें एक ऐसी तहकीक फरमाई कि सिरे से ऐतराज वारिद ही न था फिर जब पढ़ने के

लिये वालिदे साहब की खिदमत में हाजिर हुए तो हज़रत मौलाना की नजर आप के हाशिये पर पड़ी देखकर इतनी मसर्रत हुई कि गले से लगा लिया और फरमया ''अहमद रज़ा तुम मुझ से पड़ते नहीं बल्कि पढ़ाते हो''।

आप कभी कभी अपने बचपन के हालात भी बयान फरमाते एक बार फरमाया मेरी उम्र साढ़े तीन साल की होगी और मैं अपनी मस्जिद के सामने खड़ा था कि एक साहब एहले अरब के लिबास में जलवा अफरोज हुए उन्होंने मुझसे अरबी में गुफ्तगू फरमाई और मैंने भी अरबी में उन बातों का जवाब दिया इस के बाद फिर उन बुजुर्ग को कभी न देखा।

दस्तार-ए-फ़ज़ीलत

आपने चार साल की उम्र में कुरआन-ए-पाक पढ़ लिया था जब आप छः साल के थे तो बारह रबी उल अव्वल के मुबारक मौके पर एक बहुत बड़े मजम-ए-आम में सबसे पहले तकरीर फरमाई जसमें लगभग दो घन्टे इल्मो इरफान के दरिया बहाये। तेरह साल की उम्र में नहव, अदब, हदीस, तफसीर, फिकाह, बयान, तारीख, जुफर, रियाजी, मन्तिक, नुजूम, वगैरह की तकमील कर ली और उसमें कामिल महारत हासिल कर ली।

14 शाबान-ए-मोअज्जम 1286 हिजरी मुताबिक 19 नवम्बर 1869 में तेरह साल 10 महीने पाँच दिन की उम्र शरीफ में दस्तारे फजीलत हासिल की और उसी दिन मसल-ए-रज़ाअत के मुताल्लिक फतवा लिखकर अपने वालिद की खिदमत में पेश किया जवाब बिल्कुल सही था इस लिये आपकी खुदा दाद

जहनियत को देखकर वालिद साहब ने उसी दिन फतवा नवीसी की ये खिदमत आपको सौंप दी।

असातज़ा-ए-किराम

आपके उस्तादों की फेहरिस्त बहुत कम है: हज़रत मौलाना मिर्जा गुलाम कादिर बेग बरेलवी से इब्तेदाई तालीम हासिल की, और आप ने तालीम तरबीयत मुरशिद-ए-बरहक मौलाना शाह आले रसूल महरैरवी से हासिल की, बाद विसाल हज़रत मौलाना शाह अबुल हसन अहमद-ए-नूरी से हासिल की और अपने वालिदे-ए-माजिद मौलाना नकी अली साहब व हज़रत मौलाना अब्दुल अलीम साहब रामपुरी से हासिल की।

जिन्दगी के आम हालात

1286 हिजरी मुताबिक 1869 ई० में जब कि उम्र शरीफ सिर्फ तेरह साल दस माह की थी आप जलीलुश्शान आलिम फाजिल हो गये, और उस वक्त से सफर 1340 हिजरी 54 साल तक मुसलसल दीनी इल्मी खिदमात अन्जाम देते रहे। आपका जाहिर, बातिन एक था जो कुछ आपके दिल में होता वही जुबाने पाक से अदा फरमाते उस पर आप का अमल होता कोई शख्स कैसा ही प्यारा हो कितना ही माजूर हो उसकी रज़ा से कोई बात शरअ के खिलाफ न जुबान से निकालते ना तहरीर करते रियाअत मसलहत का वहाँ गुजर न था।

जब किसी सुन्नी आलिम से मुलाकात होती देख कर

बाग बाग हो जाते और उस की ऐसी इज्जत कद्र करते जिस के लायक वह अपने को समझते। जब कोई साहब हज करके आप की खिदमत में हाजिर होते तो उन से पहले ही पूछते सैय्यद-ए-आलम सल्लल्लाहो अलैहि वस्सल्लम की बारगाह-ए-बेकस पनाह में भी हाजिरी दी। अगर वह हाँ कहते तो फौरन उन के कदम चूम लेते और अगर कहते नहीं तो फिर उन की जानिब बिल्कुल तवज्जोह ना फरमाते, और काशाना-ए-अकदस से कोई साइल खाली न जाता, बेगानों की इमदाद और जरूरत मन्द की हाजत रवाई के लिये आप की जानिब से माह वार रकम मुकर्रर थी और ये इमदाद सिर्फ मुकामी लोगों के लिये न थी बल्कि बाहर मनीआर्डर से भी इमदादी रकम रवाना फरमाया करते। आपके सब काम अल्लाह तआला के लिये थे न किसी की तारीफ से मतलब न किसी की मलामत का खौफ करते। आप किसी से महब्बत करते तो अल्लाह के लिये, मुखालिफत करते तो अल्लाह ही के लिये। किसी को देते तो सिर्फ अल्लाह ही के लिये और न देते तो अल्लाह ही के लिये।

हफ्ते में दो बार जुमा और मंगल को लिबास तबदील फरमाते, अगर ईद या ईद मिलाद उन-नबी सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम यानि बारह रबीउल अव्वल का दिन जुमेरात या हफ्ते को पड़ता तो दोनों दिन लिबास तबदील फरमाते।

आप हमेशा ''बाशक्ल नाम-ए-मुहम्मद'' सल्लल्लाहो

तआला अलेहि वसल्लम सोया करते इस तरह कि दोनों हाथ मिला कर सर के नीचे रखते और पाँव समेट लेते जिस से सर ''मीम'' कोहनियाँ ''हे'' और कमर ''मीम'' पाँव ''दाल'' बन जाते, गोया नाम-ए-मुहम्मद बन जाता जिस की हदीस में बहुत फजीलत आई है। और उसका सोना रात भर इबादत में लिखा जाता है।

हदीस की किताब पर दूसरी किताब न रखते अगर किसी हदीस की तरजुमानी फरमा रहे है और दरमियान में कोई शख्स बात काटता तो सख्त नाराज होते, मजलिस-ए-मीलाद शरीफ में जिक्र-ए-विलादत शरीफ के वक्त सलात-ओ-सलाम पढ़ने के लिये खड़े हो जाते बाकी शुरू से आखिर तक दो जानू बैठे रहते।

हँसने में कभी ठट्ठा न लगाते, जमाही आने पर दाँतों में उंगलियां दबा लेते जिस की वजह से कोई आवाज न होती। काबे की तरफ मुँह करके कभी न थूकते न उधर पाँव फैलाते। बगैर सौंफ पड़ी दावात से नफरत करते, यूँ ही लोहे के कलम से परहेज करते, खत बनवाते वक्त अपना कँघा शीशा इस्तेमाल फरमाते।

तसनीफ व तालीफ, कुतुब बीनी, फतवा नवेसी और दूसरे काम भी मसरूफियत के ख्याल से खिलवत (अकेले) में तशरीफ रखते। पाँचों नमाजों के वक्त मस्जिद में हाजिर होते और हमेशा नमाज बा जमाअत अदा फरमाते और कैसी ही गर्मी क्यों न हो हमेशा अमामा (साफा) और अंगरखा के साथ नमाज पढ़ा करते थे। खुसूसन तो टोपी और कुर्ते के साथ अदा न

किया। अक्सर मकान ही से वुज़ू करके मस्जिद में आकर उत्तर जानिब की सबील पर बैठ कर वुज़ू फरमाते। आप वुज़ू और गुस्ल में बहुत इहतियात फरमाते नमाज से फारिग होकर मकान पर तशरीफ रखते और चारों तरफ कुर्सियां बिछा दी जाती, जियारत का इश्तियाक रखने वाले हजरात कुर्सी पर बैठ कर जियारत करते उनकी हाजत पूरी फरमाते और अगर किसी को कोई चीज देते वह बायाँ हाथ बढ़ाता फौरन दस्ते-ए-मुबारक रोक लेते और फरमाते सीधे हाथ में लो उलटे हाथ से शैतान लेता है।

बैअ़त व ख़िलाफ़त

(जामादिउल अव्वल 1294 हिजरी मुताबिक़ सन् 1877)

खानकाहे-ए-बरकातिया महरैरा शरीफ का मशरिकी हिस्सा, जामा मस्जिद बरकाती के करीब नीची दीवारों का एक मकान जिस में अनार का पेड़ लगा है। मकान के मगरिब का सदर गेट पर बाई तरफ एक छोटा सा हुजरा जिस में पत्थर की चौखट लगी हुई है। यह हज़रत सैय्यत शाह आले अहमद अच्छे मियाँ साहब रहमतुल्ला अलैहि का मकान है। इस हुजरे में एक तख्त बिछा हुआ है। यही वह तख्त है। जहाँ से एक आलम अपनी झोलियाँ भर कर ले जाते है।

आज इसी तख़्त पर सय्यद आले रसूल अहमदी रदिल्लाहो तआला अन्हु रौनक अफ़रोज़ है। और सामने बरेली शरीफ के मुकद्दस घराने के लोग तशरीफ फरमा है। उनमें एक शहजादा भी है और उन का इस्म-ए-गिरामी है मुहम्मद अहमद

तजा खाँ (रदियल्लाहो तआला अन्हु) और जो सिलसिले में दाखिल होने की तमन्ना लिये तशरीफ लाये है। साथ में वालिद-ए-माजिद हज़रत मौलाना नकी अली खाँ साहब भी है। हज़रत सय्यद आले रसूल रदियल्लाहो तआला अन्हु एक ही नजर-ए-रूहानियत से शहजादे का बलन्द इकबाल पहचान लेते हैं। हाथों में हाथ लेते हैं और कतरा समुद्र से जा मिलता है और ऐसा मिलता है कि खुद समुद्र बन जाता है। बैत खत्म होती है और मुर्शिद की रूहानी तवज्जो से सरशार मुरीद बाहर तशरीफ लाते हैं। खुद्दामे खानकाह पर ऐसी कैफियत तारी हो जाती है कि वे इखतियार-ए-इल्मे जलालत, "अल्लाह अल्लाह" पुकार उठते हैं। इस खानवादे की रिवायत के मुताबिक इस्म-ए-जलालत सिर्फ उसी वक्त बुलन्द किया जाता है। जब साहिबे सज्जादा अपने हुजराये सज्जादगी से बाहर तशरीफ लाते हैं। आज खादिमों को किया सूजी हुजूर साहिबे सज्जादा तो अभी भी अपने हुजरे में तशरीफ फरमा हैं। और हुजरे से बाहर आने वाले तो मुहम्मद अहमद रज़ा हैं फिर आज खानदानी रिवायत में फर्क कैसा! लेकिन खादिमों का कोई कुसूर नहीं। उन की नजरे इस वक्त अहमद रज़ा को नहीं बल्कि आले रसूल को देख रही है। (सुब्हान अल्लाह) क्या तालिब और क्या मतलूब तसर्रुफ हो तो ऐसा एक नजर में अपना जैसा बना दिया, जब हुजरे में दाख्लि हुए थे तो अहमद रज़ा और बाहर तशरीफ लाये तो हर इल्म ओ फन के अल्लामा, दरिया-ए-रहमत, मुजददिदे-ए-आजम, आला हज़रत बन चुके थे।

मुर्शिदे-ए-रौशन जमीर ने अपनी रूहानी कुव्वत से देख लिया और कुदरत की लिखी रौशन तहरीर पढ़ ली कि ये साहबजादा आगे चलकर इस सदी का मुजददिद बनेगा और

हुजूर गौसे-ए-आजम का नायब और रसूलुल्लाह के इल्म का वारिस बनेगा।

हुजूर सैय्यद आले रसूल अहमदी रदियल्लाहो तआला अन्हु ने उसी वक्त आला हज़रत को खिलाफत भी अता फरमा दी। हज़रत शाह अबू हसन अहमद-ए-नूरी ने हुजूर खातुमुल बरकात से पूछा आपके खानदान में तो खिलाफत बड़ी रियाजत और मुजाहिदे के बाद दी जाती है। आपने अहमद रज़ा खाँ को फौरन खिलाफत अता फरमादी, हज़रत सैय्यद शाह आले रसूल रदियल्लाहो तआला अन्हु ने इरशाद फरमाया कि "मियाँ साहब वह लोग गन्दे दिल और नफ्स लेकर आते हैं तो उनकी सफाई की जाती है। फिरखिलाफत से नवाजा जाता है। मगर अहमद रज़ा पाकीजा नफ्स और दिल के साथ आये थे उन्हें सिर्फ निसबत की जरूरत थी वह हमने अता फरमा दी"।

इसी महफिल में आला हज़रत के मुर्शिद सैय्यद आले रसूल रदियल्लाहो तआला अन्हु ने इरशाद फरमाया "मियाँ साहब एक अर्से से एक फिक्र मुझे परेशान किये हुए थी बिफज्लिही तआला आज वह फिक्र दूर हो गई। कयामत में जब अल्लाह तआला मुझ से पूछेगा कि आले रसूल हमारे लिये क्या लाया, तो मैं मौलवी अहमद रज़ा खाँ को पेश कर दूँगा"।

फिर इरशाद फरमायाः "अब हम बूढ़े हुए, हमारा इल्म बूढ़ा हुआ, तुम जो कुछ लिखा पढ़ा करो वह मौलवी अहमद रज़ा खाँ को दिखा लिया करो"। (सुब्हान अल्लाह!) मुर्शिदे-ए-बरहक साफ तौर पर चौहदवी सदी के मुजद्दिद-ए-आजम होने की आला हज़रत को बिशारत दे रहे हैं। और इसी महफिल में शाह आले रसूल रहमतुल्लहि तआला अलैहि ने तमाम आमाल, अशगाल जो खानवादा-ए-बरकातिया में

सीना व सीना चले आ रहे थे अता फरमा दिये।

आला हज़रत भी अपने मुर्शिद का इस दर्जा अदब मलहूज रखते थे कि मारहरा शरीफ के स्टेशन से खनकाहे-ए-बरकातिया तक नंगे पाँव जाते और जब मारहरा शरीफ से जब कोई खत या पैगाम लेकर बरेली शरीफ आता तो उसके खाने का ख्वान अपने सर पर रख कर लाते। हज़रत सैय्यद शाह अबुलहसन अहमद-ए-नूरी रदियल्लाहो तआला अन्हु ने आला हज़रत को "चशम-ए-खानदाने-ए-बरकातिया" फरमाया, और इस दौर में सुन्नियत की कसौटी मौलाना अहमद रज़ा खाँ साहब है। (रदियल्लाहो तआला अन्हु) आला हज़रत और खानदान-ए-बरकातिया का ताअल्लुक मिसाली है।

आला हज़रत की इनकिसारी

जनाब सैय्यद अय्यूब अली साहब फरमाते हैं कि एक कम उम्र साहबजादे निहायत बेतकल्लुफाना अन्दाज में हाजिर हुए और अर्ज किया मेरी बुआ (माँ) ने तुम्हारी दावत की है। कल सुबह को बुलाया है हुजूर ने उन से दरयाफत फरमाया मुझे दावत में क्या खिलाईएगें उस पर उन साहबजादे ने अपने कुर्ते का दामन जो दोनों हाथों से पकड़े हुए थे, फैला दिया जिसमें माश की दाल और दो चार मिर्चे पड़ी हुई थी कहने लगे देखिये यह दाल लाया हूँ। हुजूर ने उनके सर पर दस्ते शफकत फिराते हुए फरमाया अच्छा मैं और ये (हाजी किफायतुल्लाह साहब की तरफ इशारा करते हुए फरमाया) कल दस बजे दिन के आऐंगे इन्शा अल्लाह तआला और

हाजी साहब से फरमाया मकान का पता मालूम कर लीजिए वह साहिबजादे मकान का पता बता कर चले गये।

दूसरे दिन मुकर्ररा वक्त पर हाथ में असा लिये हुए हुजूर बाहर तशरीफ लाये। और हाजी साहब से फरमाया चलिये उन्होंने कहा कहाँ फरमाया कल उन साहबजादे के यहाँ दावत का वादा जो किया था, आप को मकान का पता हो गया है। या नहीं। अर्ज किया हुजूर मलुकपुर में है, और साथ हो लिये। जिस वक्त मकान पर पहुंचे तो वह साहिबजादे दरवाजे पर खड़े इन्तेजार कर रहे थे। हुजूर को देखते ही भागते हुए ये कहकर ''अरे वुआ, मौलवी साहब आ गये'' मकान के अन्दर चले गये। दरवाजे पर एक छप्पर पड़ा था वहाँ खड़े होकर हुजूर इन्तेजार फरमाने लगे। कुछ देर बाद एक बोसीदा (टुटी हुई) चटाई आयी और डलिया में मोटी मोटी बाजरे की रोटियाँ और मिटटी की रकावी में दही माश की दाल जिसमें मिर्चो के टुकड़े पड़े हुए थे, लाकर रखदी और कहने लगे खाओ। हुजूर ने फरमाया वहुत अच्छा खाता हूँ, हाथ धुलाने के लिये पानी ले आईए। उधर वह साहिबजादे पानी लाने गये इधर हाजी साहब ने कहा हुजूर ये मकान नकारची का है हुजूर यह सुनकर बहुत नाराज हुए फरमाया अभी क्यों कहा, खाना खाने के बाद कहा होता, इतने में वह साहिबजादे पानी लेकर आ गये। हुजूर ने फरमाया आपके वालिद साहब कहाँ हैं और क्या काम करते थे। दरवाजे के परदे में से उन साहबजादे की वालिदा साहिबा ने अर्ज किया हुजूर मेरे शौहर का इनतिकाल हो गया वह किसी जमाने में नौवत बजाया करते थे उसके बाद तौबा करली थी अब सिर्फ यह लड़का है, जो राज मजदूरों के साथ मजदूरी करता है। हुजूर ने

अल्हमदुल्लिाह कहा और दुआ खैर वरकत फरमाई।

हाजी साहब ने हुजूर के हाथ धुलावाये खुद हाथ धोकर खाना खाने लगे मगर दिल में सोचा कि हुजूर खाने में वहुत ऐहतियात फरमाते हैं गिजा में सूजी का विस्कुट इस्तेमाल फरमाते हैं। यह रोटी वह भी बाजरे की और उस पर माश की दाल किस तरह तनावुल फरमाएंगे। मगर कुरवान उस अखलाके-ए-दिलदारी के कि मेजवान की खुशी के लिये खूब सैर होकर खाया हाजी साहब फरमाते हैं कि मैं जब तक खाता रहा हुजूर भी वरावर तनावुल फरमाते रहे। वहाँ से वापसी में पुलिस चौकी के करीव हाजी साहब का शुवा दूर करने के लिये फरमाया अगर ऐसी खुलूस की दावत रोज हो तो रोज कवूल करूँ।

मौलाना जुफरूद्दीन साहब फरमाते हैं। मेरे कयाम वरेली शरीफ के जमाने में एक वाकिया पेश आया मुहल्ला वासमन्डी के करीव एक साहव आला हज़रत की दावत करके चले गये। दूसरे दिन गाड़ी आई आला हज़रत ने मुझ से फरमाया मौलाना आप भी चलें। गर्मी का जमाना था और वाद मगरिव का वक्त मकान पर गाड़ी पहुँची तो मेजवान साहव इन्तेजार में वैठे थे, वाहर जगाह न थी अन्दर मकान में तशरीफ ले गये, आंगन में एक चारपाई विछी हुई थी उस पर दरी थी, चलते वक्त मैंने ख्याल किया पुलाव जरूर होगा। अव जो देखता हूँ हाथ धुलाने के वाद एक डलिया में चन्द रोटियां रखी हुई और कीमा गाये के वने गोश्त का था। ये देखकर मुझे वड़ी उलझन हुई निगाह ऊपर उठाई तो सामने खश्क पोश (टूटा फूटा) मकान नजर पड़ा समझा कि आदमी गरीव है। इस लिये जो हो सका हाजिर किया लेकिन साथ साथ ख्याल हो रहा था कि आला हज़रत तो गाये

का गोश्त तनावुल नहीं फरमाते अगर शोरवा होता तो शोरवा ही पर इन्तेफाक फरमाते। इसी ख्याल में था कि आला हज़रत ने इरशाद फरमाया हदीस में है कि जो

بسم الله الذی لایضر مع اسمه شیء فی الارض ولا فی السماء وهوا لسمیع العلیم

पढ़कर मुसलमान जो कुछ खाये हर्गिज नुकसान न दे, मैं समझ गया कि मेरे शुवा का जवाव है। मेजवान साहव मेरे मुलाकाती थे जव खाने के वाद हाथ धुलाने लगे तो उनसे कहा कि इस गरीवी की हालत में आपको आला हज़रत की दावत की जरूरत ही किया थी। वोले कि गरीवी ही की वजह से तो आला हज़रत की दावत की ताकि आला हज़रत के कदमे-ए-मुवारक मेरे यहाँ पहुँचे, नान नमक जो कुछ हो सका हाजिरे खिदमत कर दिया। हुजूर खाने के वाद दुआ फरमायें तो घर में खुशहाली आये वरकत-ए-दीन व दुनिया हासिल हो।

आला हज़रत का इल्म

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा खाँ रदियल्लाहो तआला अन्हु ने उलूम-ए-दरसिया के अलावा दूसरे उलूम व फनून की तहसील फरमाई, हैरत की बात ये है कि बाज इल्म ऐसे हैं जिन में किसी उस्ताद की रहनुमाई के बगैर आपने अपनी खुदादाद जहनिय्यत से कमाल हासिल किया। ऐसे इल्मों की तादाद तकरीबन चव्वन (54) इनमें बाज इल्म ऐसे हैं कि बड़े बड़े आलिम उन्हें जानना

तो शायद उनके नाम से भी आगाह न होगें।

आला हज़रत की बेमिसाल जहनियत का यह आलम था कि उस्ताद से कभी चौथाई हिस्से से ज्यादा कोई किताव नहीं पढ़ी वल्कि चौथाई किताव उस्ताद से पढ़ने के वाद वाकी खुद सुनादिया करते।

तेरह साल दस महीने पाँच दिन की उम्र शरीफ में 14 शॉवान 1286 हिजरी मुताविक 19 नवम्वर 1869 में आप फारिग-ए-तहसील (कोर्स पूरा होना) हुए और दस्तार-ए-फजीलत से नवाजे गये। इसी दिन मसअला-ए-रज़ाअत से मुताल्लिक एक फतवा लिखकर आपने वालिदे-ए-माजिद मौलाना नकी अली खाँ की खिदमत में पेश किया। जवाव विल्कुल सही था। वालिद साहिव ने इस अजीम जहन को देखकर उसी वक्त फतवा नवीसी की खिदमत आपके सुपुर्द कर दी। आपके उस्ताद की फेफरिस्त वहुत कम है लेकिन अल्लाह तआला ने आपका सीना इल्म से भर दिया। आपके पचास उलूम व फुनून पर किताबों लिखी और उनके ऊपर उवूर हासिल किया, आपने कमोवेश 1000 किताबें लिखीं।

डा0 सर ज़ियाउद्दीन बारगाह-ए-रज़वी में

डा0 जिया उद्दीन साहव जो इल्म-ए-रियाजी में तकरीवन हर वैरूनी यूनीवर्सिटी से डिगरियां हासिल किये हुए थे? एक वार एक मसले में इत्तेफाक से डा0 साहव को इश्तेवा हुआ हर चन्द कोशिश की मगर मसअला हल न हुआ क्यों कि

डा० साहब साहिबे हैसियत आदमी थे और इल्म के शौकीन थे इस लिये उन्होंने तय किया कि मसअला जर्मन जाकर हल किया जाये। हज़रत मौलाना सैय्यद सुलैमान अशरफ साहब उस जमाने में मुस्लिम यूनिवर्सिटी अलीगढ़ में दीनियात के नाजिम थे। डा० साहब ने दौराने गुफ्तगू उन से इस मसअले का जिक्र किया।

मौलाना साहब ने मशवरा दिया कि आप बरेली में आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा खाँ साहब के पास जाकर ये मसअला पूछ लें वह जरूर हल फरमा देगें। डा० साहब ने हैरत से कहा मैं कहाँ कहाँ से तालीम पाकर आ रहा हूँ और इल्म-ए-रियाजी के तरह तरह के मसअले हल करना जानता हूँ, जब मैं यह मसअला हल न करसका तो मौलाना अहमद रज़ा खाँ साहब जिन्होंने कभी यूरोप का तसव्वर भी न किया होगा और न ऐसे मसअले उन्होंने किसी यूनिवर्सिटी में सीखे हैं, और न उन्होंने अपने मुल्क के किसी कालेज में तालीम पाई है। वह क्या यह मुश्किल मसअला हल करेगें। डा० साहब ने सफर-ए-युरोप का सामान तयार करना शुरू कर दिया।

मौलाना सैय्यद सुलैमान अशरफ साहब ने एक दिन फिर कहा आप बरेली तो हो आयें, और एक मरतबा आला हज़रत से मुलाकात कर लीजिये। फिर आपको इखतियार है। आप यूरोप या अमेरिका जायें ये सुनकर डा० जियाउद्दीन साहब ने कहा मौलाना आप क्या राये देते हैं। आखिर अक्ल भी तो कोई चीज है। फुजूल मेरा वक्त बरबाद होगा ये मसअला मौलाना अहमद रज़ा के बस का नहीं है।

मौलाना सुलैमान अशरफ साहब ने कहा आखिर हर्ज क्या है। बरेली शरीफ दूर तो नहीं चन्द घन्टे का सफर है। आखिर

डा० साहब मौलाना अशरफ साहब के साथ बरेली पहुँचे, आला हज़रत के दौलत कदह पर हाजिर हुए उस वक्त अस्र की नमाज होने जा रही थी। डा० साहब ने वुजू करते हुए अपने मोजों पर मसह किया और नमाज पढ़ते वक्त मोजे को उतार दिया तो आला हज़रत ने उनसे फिर पाँव धुलवाये।

नमाज के बाद दौरान-ए-गुफ्तगू डा० साहब ने मसअला पूछा। आला हज़रत ने फरमाया इसका जवाव यह है, और अपना कलमी रिसाला जिसमें डायग्राम भी बने थे डा० साहब के सामने पेश किया जिसे देख कर डा० साहब को वड़ी हैरत हुई, और डा० साहब बोले मैंने यह इल्म हासिल करने के लिए वहुत से गैर मुल्कों के सफर किये मगर यह वात कहीं भी हासिल न हुई। मैं अपने आपको इस वक्त विल्कुल तिफले-ए-मकतव समझ रहा हूँ, आप ये बतायें इस फन में आप का उस्ताद कौन है? आला हज़रत ने फरमाया मेरा कोई उस्ताद नहीं, मैंने अपने वालिद-ए-माजिद अलैहिर रहमतो व रिजवान मरज़ाअ्, तफरीक, जरव, तकसीम के महिज चार काइदे सिर्फ इसलिये सीखे थे तरका के मसाइल में इसकी जरूरत पड़ती है।

शरह चगमीन शुरू की थी कि हज़रते वालिदे माजिद ने फरमाया कि इस में अपना वक्त क्यों सर्फ करते हो प्यारे मुस्तफा स्ल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वारगाह से ये उलूम खुद ही सिखा दिये जाएगें चुनान्चे ये जो कुछ आप देख रहे हैं मैं मकान की चार दीवारी के अन्दर बैठा खुद ही करता रहता हूँ ये सब सरकार सल्लाल्लाहो अलैहि वसल्लम का करम है। इसके बाद कुसूर आशारिया मुतावालिया का जिक्र चल पड़ा डा० साहब ने कहा कि बस सिर्फ तीसरी कुव्वत तक का सवाल किया जा

सकता है। इस पर आला हज़रत ने सैय्यद कनाअत अली और मेरी तरफ इशारह करके फरमाया कि मैंने इन दोनों बच्चों को कुछ कायदे सिखाये हैं आप इन्हें जिस कुव्वत का सवाल देगें इन्शाअल्लाह ये बच्चे हल कर देगें।

डा० साहब हैरत से हम दोनों का मुहँ तकने लगे और कहा मैंने सुना था कि दुनिया में इल्मे लदुन्नी है मगर आज खुद अपनी आँखों से देख लिया।

इमाम अहमद रज़ा की शायरी

नात गोई एक फन है और मुश्किल फुन है। ये पुल सिरात तय करने से भी दुशवार तर है। इस फन की नजाकतों से रोशनास होने के लिये बड़ी ही होशयारी और अदव शनासी की जरूरत पड़ती है। किसी ख्याल को फनी पैकर अदा करने से पहले उसको सौ बार एहतियात की छलनी में छान लेना पड़ता है। उल्मा और साहिबाने इल्म व फन का कहना है कि नात की राह शायरी की सख्त तरीन राहों में से है। इस लिये खुश नसीब वह है। जो नाते रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वस्ल्लम की इन सब मनजिलों में से गुजरता हुआ अदव, इश्क, शरीयत सब को मलहूज रख कर बारगाहे रसूल लुल्लाह अलैहि वस्सलाम को अपनी अकीदत व मुहब्बत का सच्चा शायरी गुलदस्ता पेश करे।

आला हज़रत मौलाना अहमद रज़ा खाँ साहब (रदियल्लाहो तआला अन्हु) जिस तरह इल्मों अमल के इमाम हैं तो उसी तरह आप का कलाम भी कलामुल इमाम है आप खुद फरमाते हैं।

कुरआन से मैंने नात गोई सीखी
यानी रहे अहकामे शरीयत मलहूज

आपका नातिया दीवान ''हदाइके बखशिश'' दो हिस्सों में है जो हर जगाह दस्त याब है। उसका हर हर शेर हर हर लफज इश्के रसूल (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) में डूवा हुआ है इसके अलावा हम्द, नात, दुआ, इल्तेजा, सलाम, मनकबत सब कूछ मौजूद है।

आप आम अरबावे सुखन की तरह सुबह से शाम तक अशआर की तैयारी में मसरूफ नहीं रहते थे, बल्कि जब प्यारे मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की याद तड़पाती और दर्दे इश्क आप को वेताब करता तो खुद आपकी जुबान पर नातिया अशआर जारी हो जाते और यही शेर आपकी सोजगीए इश्क की तसकीन का समान बन जाते, आप अक्सर फरमाते थे कि जब सरकारे अकदस की याद तड़पाती है तो मैं नातिया अशआर से बेकरार दिल को तसकीन देता हूँ।

अरे ऐ खुदा के वन्दो कोई मेरे दिल को ढूंढो
मेरे पास था अभी तो अभी किया हुआ खुदाया
न कोई गया न आया

हमें ऐ रज़ा तेरे दिल का पता चला बा मुश्किल
दरे रौजा के मकाविल वह हमें नजर तो आया
ये न पूछ कैसा पाया

आला हज़रत ने शायरी बराये शायरी नहीं बल्कि शायरी बराये इबादत की है। आगे फरमाते हैं।

मागेंगे मागे जाएंगे मुँह मांगी पायेगें
सरकार में ला है न हाजत अगर की है

☆☆☆☆☆

उस गली का गदा हूँ मैं जिसमें

माँगते ताजदार फिरते हैं

☆☆☆☆☆

मेरे करीम से गर कतरा किसी ने मांगा

दरिया बहा दिये हैं दुरबे बहा दिये हैं

आपने शेर शायरी का सारा वक्त नात के मैदान में सर्फ किया, आप दुनिया के किसी ताजवर को ताजदार कहना गुलामे रसूल के लिये तौहीन समझते थे। यही वजह है आपने किसी अमीर, बादशाह, नवाब, हाकिम की मदह सराई नहीं की। एक बार नवाब रियासत नानपारा जिला बहराइच की मदह में शायरों ने कसीदे लिखे कुछ लोगों ने आपकी खिदमत में गुजारिश की आप भी नवाब की शान में कोई कसीदा लिखें इसके जवाब में ये नात लिखी

वह कमाले हुस्ने हुजूर है कि गुमाने नक्शे जहाँ नहीं

यही फूल खार से दूर है यही शमा है कि धुआँ नहीं

करूँ मदह अहले दुवल रज़ा पड़े इस बला में मेरी बला

मैं गदा हूँ अपने करीम का मेरा दीन पारा-ए-ना नहीं

यानी मैं क्यों किसी दौलत वाले की शान में कसीदा लिखूँ मेरा दीन नानपारा नहीं।

आपने हमेशा आका-ए-दो जहाँ सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अपना रहबर माना और आप की शान में ही नातों का गुलदस्ता पेश किया

मुल्के सुखन की शाही तुम को रज़ा मुसल्लम

जिस समत आ गये हो सिक्के बिठा दिये हैं

हज बैतुल्लाह शरीफ़ और ज़ियारत

अपने पहला हज अपने वालदैन के साथ 1876 मुताबिक 1295 हिजरी में किया। और जियारते हुजूरे अनवर सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्ल्म के लिये रौजे पर हाजिर हुए आपके दिल मुबारक में पहले ही से महब्बत अल्लाह तआला ने अपने हबीबे अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की कूट कूट कर भर दी थी। खुद फरमाते हैं।

اولٓئك كتب فی قلوبهم الايمان وايدهم بروح منه

(तर्जुमा) "यह वह लोग हैं जिन के दिलों में अल्लाह तआला ने इमान नक्श फरमा दिये"

इसी से आप ने अपनी तारीखे विलादत निकाली हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की महब्बत नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में इरशाद फरमाते हैं।

"तुम में कोई मुसलमान न होगा जब तक कि अपनी माँ बाप और सारे जहाँ से ज्यादा मुझ से महब्बत न रखे"

हर मुसलमान का दावा है कि मुझे सारे जहाँ से ज्यादा हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से महब्बत है। मगर दोस्ती दावे के लिये दलील होना जरूरी है तो हमारे दिल का चैन जाने कौनैन हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की महब्बत की दलील यह है। जिस को जिस से महब्बत होती है वह हरवक्त उसी का जिक्र करता है। उसी की याद में मशगूल रहा है लेकिन सरकार जिसे कुबूल फरमाएं वरना गुलामी का दावा तो सब करते हैं। मगर यह जरूरी है कि सच्ची

मुहब्बत है अल्लाह तआला फरमाता है

قل ان كنتم تحبون الله فاتبعونى يحببكم الله

(तर्जमा): "ऐ महबूब जो अल्लाह ताआला के साथ महब्बत का दावा करते हैं आप उन से फरमा दीजिये कि मेरी इत्तबा करो मेरी फरमा वरदारी करो।"

तो अल्ला तआला तुम्हें अपना महबूब बना लेगा आ़ला हज़रत की मुबारक जिन्दगी को महब्बत की आँखों से नजारा करने से पता चलता है कि पैदाइश से लेकर वफात तक का एक एक लम्हा महब्बते सरकार से खाली ना था आपकी तसनीफ देखने से भी मालूम होता है कि आपने तमाम जिन्दगी सरकार की तारीफ में गुजारी आपने कुरआने करीम और हर लम्हा सून्नत पर अमल फरमाया, जब सरकार की याद आती दिल बेचैन होता।

लुत्फ उनका आम हो ही जाएगा
शाद हर नाकाम हो ही जाएगा
जान दे दो वाद-ए-दीदार पर
नक्द अपना दाम हो ही जाएगा
ऐ रज़ा हर काम का इक वक्त है
दिल को भी आराम हो ही जाएगा

और बेचेनी इस लिये भी थी कि हुजूर के वालदैन हज की तयारी कर रहे थे इधर सरकारे दोआलम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दरबार से फरयाद हुई जिसका जहूर इस तरह हुआ कि आपके वालिद साहब तशरीफ लाये और फरमाया "अहमद रज़ा तुम नहीं चलोगे" आपने ये नहीं फरमाया कहाँ और न आला हज़रत ने पूछा बल्कि ये शेर पढ़ा

जानो व दिल होशो खिरद सब तो मदीने पहुँचे
तुम नहीं चलते रज़ा सारा तो सामान गया

और सफर की तैयारी शुरू कर दी 26 शव्वाल 1295 हिजरी में सफर हरमैन शरीफ फरमाया। जब हज व उमरा से फरागत पाई एक दिन बाद मगरिब मुकामे इब्राहीम में अदा फरमाई, बाद नमाज हज़रत हसीन बिन स्वाले इमाम शाफई ने मुड़ कर देखा बगैर तआरूफ (जान पहचान) आला हज़रत का हाथ पकड़ा और चल दिये। आला ने भी कुछ न फ़रमाया और बिला तकल्लुफ़ चलते रहे यहाँ तक आप अपने दौलत कदाह (घर) पर पहुँचे और देर तक आला हज़रत की पेशानी (माथा) पकड़ कर फ़रमाते रहे

"बेशक मैं अल्लाह का नूर इस पेशानी में पाता हूँ"

इसके बाद सिलसिला-ए-कादरिया की इजाज़त अपने दस्ते मुबारक से लिख कर आला हज़रत ने उन्हें अता फ़रमाई और फरमाया तुम्हारा नाम ज़िया उद्दीन अहमद है।

क्योंकि आपका इरादा घरसे ही मदीने शरीफ़ का था लिहाज़ा अब वहाँ याद आती तो फ़रमाते।

हाजियों आओ शहनशाह का रौज़ा देखो
काबा तो देख चुके कावे का कावा देखो
आबे ज़मज़म तो पिया ख़ूब बुझाईं प्यासे
आओ जूद-ए-शहे कौसर का भी दरिया देखो
ख़ूब आखों से लगाया है ग़िलाफ़े काबा
फ़क़-ए-महबूब के पर्दे का भी जलवा देखो
ग़ौर से सुन तो रज़ा कावे से आती है सदा
मेरी आँखों से मेरे प्यारे का रौज़ा देखो

अल्लाह हो अकबर क्या समा होगा जो आपने सरकार के रौज़े पर हाज़िर हो कर सुनहरी जालियों का नज़ारा पेश करके अर्ज़ किया होगा, और सरकार ने जबाव से नवाज़ा होगा, अल्लाह तआला हम सब को सरकारके रौज़े की ज़ियारत नसीब फ़रमाये।

दोबारा हज व ज़ियारत

आप 1878 में हज व ज़ियारत के शरफ़ से मुशर्रफ़ हो चुके थे दूसरी बार हाज़री बिल्कुल अजीब तरीक़े से हुई तैयारी ना थी वाक़िया यूँ है 1323 हिजरी मुताबिक़ 1906 में आला हज़रत के भाई मौलाना मुफती मुहम्मद रज़ा ख़ाँन और आपके बड़े साहिबज़ादे हज़रत मौलाना हामिद रज़ा ख़ाँ मय मुतालेक़ीन हज के इरादे से बरेली से रवाना हुए, आला हज़रत उन सब को लखनऊ तक पहुँचा कर वापस हूए क्योंकि तकदीर में हज लिखा था इस लिये आपने अचानक सफर का इरादा फरमाया ट्रेन में सवार होने से पहले अपनी रवानगी का तार बम्बई रवाना किया जब जूमे के दिन सुबह 8 बजे बम्बई पहुँचे तो देखा कि स्टेशन पर हाजी कासिम वगैरह अहबाब गाड़ियां लेकर मौजूद हैं। सलाम व मुसाफा के बाद उन लोगों का पहला लफ्ज यही था हुजूर इस वक्त शहर को न चले वक्त कम है। सीधे करन तीना चलीये, आपके अजीज अभी नहीं गये है। डाक्टर हाजियों की आधी जमाअत को भपारा दे चुका तो उसे सख्त घबराहट पैदा हुई उसने कहा बाकी लोगों का भपारा कल जुमे को होगा, इस तरह हज़रत मौलाना हामिद रज़ा साहब और सब अजीज बाकी रह गये, लिहाजा आप सीधे वहीं चले। चुनान्चे आला हज़रत वहाँ

तशरीफ ले गये। अल्लाह तआला का फजल कि आप को भी जगह उसी जहाज में मिल गई और आपने अपने अजीजों के साथ हज अदा फरमाया।

अद्दौलतुल मक्कीया

23 जिल हिज्जा 1323 हि० 20 फरवरी 1906को अस्र की नमाज से फारिग होकर आला हज़रत कुतुबखानें हरम की जानिब तशरीफ ले जा रहे थे। तो जब दफतर के जीने पर चड़ने लगे तो पीछे से आहट मालूम हुई, देखा तो मौलाना स्वाले कमाल सलाम व मुसाफे के बाद दोनों दफ्तर में आकर बैठ गये। हज़रत मौलाना स्वाले कमाल ने जेब से एक पर्ची निकली जिस पर इल्मे गैब के मुताल्लिक पाँच सवाल थे, आला हज़रत की तरफ बढाते हुए फरमाया कि ये सवाल वहाबियों ने सय्यदना शरीफ अली पाशा के जरिये किया है, आप से जवाब मकसूद है।

आला हज़रत जवाब लिखने को फौरन राजी हो गये। उन्होंने कहा हमें ऐसा फौरी जवाब नहीं चाहिये ऐसा जवाब चाहिये कि वहाबियों के दांत खट्टे हो जाएं। आपने फरमाया इस तरह के जवाब के लिये कुछ मौहलत चाहियेः इस वक्त सिर्फ दो घड़ी दिन बाकी है। इस में क्या हो सकता है। मौलाना स्वाले कलाम ने फरमाया कल मंगल है, और परसों बुद्ध है उन दो रोज में आप जवाब लिखदे और हमें जुमेरात को मिल जाये ताकि सैय्यदना शरीफ अली पाशा के सामने पेश कर दूँ, आपने अल्लाह व रसूल के फजल पर भरोसा करके वादा फरमा लिया।

शाने इलाही कि दूसरे दिन ही बुखार आ गया लेकिन इसी हालत में आपने रिसाला ''दौलते मक्कीया'' तसनीफ फरमाया। आपकी ये तसनीफ दौलते मक्कीया आपकी जीती जागती करामत है। आपने बगैर किसी किताब की मदद से अपनी खुदा दाद कुव्वते हाफिजा और इल्म से सिर्फ साढ़े आठ घन्टे की कलील मुददत में तसनीफ फरमाया और ऐसी बहिस फरमाई कि वहाबियों के दांत खटटे हो गये और आपने हदीस व कुरआन से यह सावित कर दिया कि हुजूर को अल्लाह तआला ने इल्मे गैब अता फरमाया और आपने ऐसा इल्म का दरिया बहाया की मक्के और मदीने के उलमाये किराम आपके इल्म का लोहा मानने लगे।

आला हज़रत और अहले बैत की मुहब्बत

ये महब्बते रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ही असर है कि आप की आल यानि सैय्यद की आला हज़रत बेपनाह एहतराम व महब्बत फरमाते।

एक बार आला हज़रत पालकी में बैठे तशरीफ ले जा रहे थे और अभी पालकी थोड़ी दूर गई थी कि एक दम इमामे अहले सुन्नत आला हज़रत फाजिले बरेलवी की आवाज सुनाई देती है पालकी रोक दो। हुक्म के मुताबिक पालकी रोक दी जाती है। आला हज़रत पालकी से बाहर तशरीफ लाये और कहारों को अपने करीब में बुलाया और पूछा आप लागों में कोई आले रसूल तो नहीं। उसे अपने जददे अमजद का वास्ता सच

बताईये मेरे ईमान का जौक आले रसूल की खुश्बू महसूस कर रहा है। इस सवाल पर अचानक कहारों में से एक शख्स के चहरे का रंग फक हो गया पेशानी पर गैरत और पशेमानी की लकीरें उभर आई देर तक खामोश रहने के बाद नजर झुकाए दबी जुबान से कहा ''मजदूर से काम लिया जाता है। जात पात नहीं, आप ने मेरे जददे आला का वास्ता देकर मेरी जिन्दगी का एक राज फाश कर दिया''।

अभी उस मजदूर की बात खत्म न हुई थी कि लोगों ने पहली बार तारीख का यह हैरत अंगेज वाकिया देखा कि आलमे इस्लाम के एक मुकददस इमाम मुजददिदे आजम की दस्तार उसके कदमों पर रखी हुई है, और वह आँसुओं की बारिश में मजदूरों से इल्तेजा फरमा रहे हैं।

''ऐ शहजादे मेरी गुस्ताखी मआफ करदो, ला इल्मी में ये खता सरजद हो गई, हाए गजब हो गया कयामत के दिन अगर सरकारे दो आलम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कहीं पूछ लिया कि अहमद रज़ा मेरे फरजन्द का दोशे नाज इस लिये था कि वह तेरी सवारी का बोझा उठाये, तो मैं क्या जवाब दूँगा, उस वक्त भरे मैदाने हशर में मेरे इस इश्क की कितनी बड़ी रूसवाई होगी''।

देखने वालों का बयान है कि जिस तरह एक आशिक अपने रूठे हुए महबूब को मनाता है इसी अन्दाज में वक्त का अजीम इमाम अहले सुन्नत उस सैय्यद जादे मजदूर की मिन्नत ओ समाजत (माफी) कर रहा है। और लोग फटी फटी आँखों से

यह हैरत अंगेज वाकिया देख रहे हैं। कई बार जूबान से मआफ करदेने का इकरार कर लेने के बाद इमामे अहले सुन्नत से एक आखरी इल्तजा पेश की।

इस लाशऊरी का कफ्फारा तभी होगा कि आप पालकी में बैठें और मैं उसे अपने काधों पर उठाऊँ, हजारों इन्कार के बावजूद आखिर सय्यद जादे को आशिके रसूल (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) की जिद पूरी करनी पड़ी, ऐहले सून्नत का जलील उल कद्र इमाम मुजददिदे आजम कहारों में शामिल होकर अपने इल्म, फज्ल, जुब्बा, दस्तार और आलम गीर शोहरत का सारा ऐजाज खुश्नूदीये सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिये एक गुमनाम मजदूर के कदमों पर निसार कर रहा है।

(हयाते आला हज़रत 258)

इश्के रसूल की बुनियाद पर सादात नवाजी और दीवानगी की हदों तक उन का एहतराम और तौकीर का मुजाहिरा जो इमाम अहमद रज़ा बरेलवी के यहाँ मिलता है, सदियों तक नजर डालते हैं मगर ऐसी शखसियत नहीं मिलती ऐसी शखसियत दिखाई नहीं देती जो इश्क व मुहब्बत में सरशार होकर जजबात को अमली शक्ल देकर भी जुबान से ये अर्ज करें।

☆☆☆ हक तो यह है कि हक अदा न हुआ☆☆☆

एक सय्यद साहब बहुत गरीब थे। इस लिये सवाल किया करते थे मगर सवाल की शान अजीब थी, जहाँ जाते फरमाते ''दलवादो एक सय्यद को'' एक दिन इत्तेफाक से फाटक (घर)

में कोई न था। सय्यद साहब तशरीफ लाये और सीधे जनाने दरवाजे पर पहुँच कर सदा लगाई, ''दिलवा दो सय्यद को'' आला हज़रत के पास उसी दिन जाती अखराजाते इल्मी, यानी किताब कागज वगैरह के लिये दो सौ रूपये आये थे जिस में नोट भी थे और अठन्नी, चवन्नी पैसे भी थे कि जिस चीज की जरूरत हो सर्फ (खर्च) फरमाए! आला हज़रत ने बक्से के उस हिस्से को जिसमें ये सब रूपये थे सय्यद साहब की आवाज सुनते ही उन के सामने लाकर हाजिर कर दिये। और उनके रूबरू लिये हुए खड़े रहे। सय्यद साहब देर तक उन को देखते रहे, इसके बाद एक चवन्नी ले ली, आला हज़रत ने फरमाया हुजूर ये सब हाजिर है सय्यद साहब ने फरमाया मुझे इतना काफी है। सय्यद एक चवन्नी लेकर सीढ़ी से उतर आये और आला हज़रत भी साथ साथ तशरीफ लाए, फाटक पर सय्यद साहब को रूखसत किया। और खादिम से फरमाया देखो सय्यद साहब को आइन्दा आवाज देने की जरूरत न पड़े जिस वक्त सय्यद साहब पर नजर पड़े एक चवन्नी हाजिर करके सय्यद साहब को रूख़सत कर दिया करो।

(हयाते आला हज़रत 254)

आला हज़रत के यहाँ ''मजलिसे मीलादे मुबारक'' में सय्यदों को बनिस्बत और लोगों के दो गुना हिस्सा बरवक्त तकसीम शीरीनी मिला करता था। एक साल व बारहवीं शरीफ के मौके पर हुजूम (भीड़) में मौलाना सय्यद महमूद जान साहब

रहमतुल्लाहे तआला अलैहि को खिलाफे मामूल एक हिस्सा यानी दो तश्तरी शीरीनी की बिला कस्द पहुँच गया। मौसूफ खामोशी के साथ हिस्सा लेकर सीधे आला हज़रत की खिदमत में हजिर हुए और अर्ज किया कि हुजूर के यहाँ आज मुझे आम हिस्सा मिला, फरमाया सय्यद साहब तशरीफ रखें और तकसीम करने वाले की फौरन तल्बी हुई और सख्त इजहारे नाराजगी फरमाते हुए इरशाद फरमाया अभी अभी एक ख्आाव में जिस कदर हिस्से आ सके भर कर लाओ चुनांचि फौरन ही तकमील हुई। सय्यद साहब ने अर्ज किया हुजूर ये मकसद न था हाँ कल्ब को जरूर तकलीफ हुई जिसे बरदाश्त न कर सका, फरमाया सय्यद साहब ये शीरीनी तो कुबूल करना ही होगी वरना मुझे सख्त तकलीफ रहेगी और शीरीनी बाटने वाले से कहा एक आदमी को सय्यद साहब के साथ कर दो जो इस ख्वान को मकान तक पहुँचा आए, उन्होंने फौरन तकमील की, ये है इश्के रसूल और अहले बैत का एहतराम।

(हयाते आला हज़रत 258)

इमाम अहमद रज़ा सच्चे आशिक़े रसूल ﷺ

मुसलमानों का हकीकी सरमाया दर हकीकत इश्के रसूल ही है। सहाबा-ए-किराम गौस, कुतुब, अब्दाल और औलिया अल्लाह की जिन्दगी के मुताले के बाद नजर इन नुकात पर ही

रूकती है कि उन सब हजरात की जिन्दगी इश्के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद भी है कि उन की जाते वाला सिफात को उन का उम्मती अपने माँ, बाप, बीबी, बच्चों और माल जान से ज्यादा अजीज रखना होगा। बुजुर्गानेदीन की मुबारक जिन्दगियों पर नजर डालने से अन्दाज होता है, उन का मकसदे हयात सिर्फ और सिर्फ इश्के रसूल ही था।

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा खाँ की जिन्दगी का असल मकसद इश्के रसूल ही था। और इश्के मुस्तफा सल्लाल्लाहो अलैहि वसल्लम उन की हयात का मजहर था, आप की जाहिरीं व बातिनी जिन्दगी में इश्के नबवी की रोशनी बराबर जगमगाती रही। इश्के रसूल आप को विरसे में भी मिला था। होश सभालने के वक्त से मौत की आगौश में सो जाने तक जिन्दगी के किसी हिस्से में भी आपने किताबुल्लाह व सुन्नते रसूल सललल्लाहो अलैहि वसल्लम से अलग रहकर कोई काम न किया। आपका उठना बैठना खाना पीना लेटना मिलना जुलना दोस्ती दुश्मनी सब अल्लाह के लिये ही थी।

आला हज़रत को सरकारे दो आलाम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से किस कद्र इश्क था और सरकार के इरशाद पर किस कद्र यकीन था उसकी मिसाल आला हज़रत की खुद की जुबान से सुनिये।

"बरेली में मर्ज ताउन (प्लेग) फैला एक दिन मेरे मसूड़ों में वर्म हो गया और इतना बढ़ गया मुहँ बिल्कुल बन्द हो गया। बुखार बहुत शदीद, हकीम ने बगैर देखे सात आठ बार कहा ये वही है ये वही है यानी प्लेग! हालाँकि मैं खूब जानता था कि ये

गल्त कह रहे हैं, न मुझे ताउन है और न इन्शाअल्लाह कभी होगा इस लिये कि मैंने ताउन जदा को देख कर वह दुआ पढ़ ली है, जिसे हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया किसी बला जदा को देख कर अगर दुआ पढ़ ली जाए तो वह हमेशा उस बला से महफूज रहेगा, जिन मरीजों जिन जिन बलाओं के मुवतिला को देख कर मैंने इसे पढ़ा अल्हम्दुलिल्लाह आज तक महफूज हूँ, न कभी वह मर्ज मुझे हो, मुझे हदीस पर इतमिनान था कि मुझे ताऊन कभी न होगा आखिर शब में दर्द बढ़ा तो दिल ने बारगाहे इलाही में अर्ज की, तो किसी ने मेरे दाहिने कान पर मुँह रख कर कहा मिसवाक और काली मिर्च, मैंने मिसवाक और काली मिर्च का इशारा किया जब दोनों चीजें आई। उस वक्त मैंने मिसवाक के सहारे पर थोड़ा मुँह को खोला और दातों में मिसवाक रखकर काली मिर्च का सफूफ छोड़ दिया। पिसी हुई मिर्चे इस रास्ते से दाढ़ों तक पहुँची थोड़ी देर हुई एक कुल्ली खून की आयी और वह मर्ज जाता रहा, मुँह खुल गया मैंने अल्लाह तआला का शुक्र अदा किया और हकीम साहब से कहलवा भेजा कि आपका वह ताऊन बिफज्लेही तआला दफा हो गया। दो तीन रोज में बुखार भी जाता रहा।

इसी तरह एक बार कसरते मुताअला (पढ़ाई) के सबब आँखों में तकलीफ शुरू हुई। उस वक्त एक बड़ा डाक्टर आँखों का डा० इन्द्रासन नामी था उसने देखने के बाद कहा कुतुब बीनी से आँखों में पोस्त (झिल्ली) आ गई। पन्द्रह दिन तक किताब न देखें लेकिन उन पन्द्रह दिन में भी आप से किताब न छूट सकी। आला हज़रत लिखते हैं हकीम सय्यद मौलवी इश्तेयाक

साहब सैस्वानी डिप्टी कलैक्टर हकीमी भी करते थे और फकीर के यहाँ महमान थे। फरमाया आबे नूजूल है। बीस बरस के बाद (खुदा न करे) आँखों में पानी उतर आयेगा, मैंने कोई परवाह नहीं की मैंने तो आबेनुजूल वाले को देखते ही दुआ पढ़ ली थी और सरकार के इरशाद के मुताबिक मुझे कुछ न हुआ। अल्हम्दुलिल्लाह बीस बरस तो दर किनार तीस ज्यादा हो गया मैंने आज तक न कुतुब बीनी में कमी न की न करूँ''।

आला हज़रत इमाम अहले सुन्नत को सरकारे दो आलम के इरशाद पर कामिल यकीन था। और ये सब इश्के रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम ही का असर था।

आला हज़रत की सख़ावत

आला हज़रत जहाँ इतने बड़े आलिम फाजिल वहीं पर दरिया दिल भी, और अगर सखावत का दरिया कहा जाये तो ठीक होगा, आपने हमेशा हाजत मन्दों की मुशकिल हल फरमाई है। और आज भी फरमाते हैं, ता कयामत आपका फैज जारी रहेगा।

जनाब जकीउल्लाह खाँ साहब का बयान है कि सर्दी का मौसम था, बादे मगरिब आला हज़रत हसबे मामूल (रोज की तरह) फाटक (घर) में तशरीफ लाकर सब लोंगों को रूखसत कर रहे थे। खादिम को देखकर फरमाया आपके पास रज़ाई नहीं है। खादिम खामोश हो गया। उस वक्त आला हज़रत जो रज़ाई ओढ़े थे खादिम को उतार कर दी। और फरमाया ओढ़ लीजियेगा खादिम ने अदब से कदम बोसी की और आला हज़रत के

फरमान के मुताबिक रज़ाई ओढ़ ली।

उन्हीं का बयान है कि आला हज़रत ने जब वह रज़ाई मुझे अता फरमादी, उसके दो तीन दिन के बाद हज़रत की नई रज़ाई हो गई अभी ओढ़े हुए चन्द ही रोज गुजरे थे कि मस्जिद में एक मुसाफिर रात के वक्त आये और आलाहज़रत से अर्ज किया मेरे पास ओढ़ ने को कुछ नहीं है। आला हज़रत ने वही नई रज़ाई उन मुसाफिर को अता फरमादी।

सैय्यद अय्यूब अली साहब का बयान है मौसम बरसात में बाज वक्त मस्जिद में हाजरी में परेशानी होती थी, हाजी किफात उल्लाह साहब ने इस तकलीफ को महसूस करते हुए एक छतरी खरीद कर नज्र की और अपने पास रख ली, जब हुजूर काशाना—ए—अकदस से बाहर तशरीफ लाते तो हाजी साहब छतरी लगाकर मस्जिद तक ले जाते, अभी कुछ दिन ही गुजरे थे कि एक हाजत मन्द ने छतरी का सवाल किया हुजूर ने फौरन वह छतरी हाजी साहब से दिलवादी।

जनाब सैय्यद अय्यूब अली साहब का बयान है कि मौसमे बारिश में शब के वक्त जनाव सैय्यद महमूद जान साहब हजिर होकर अर्ज करते हैं। हुजूर जो मैं मांगूंगा अता फरमा दें। अगर मेरे मकान में हो तो जरूर हाजिर करूँगा सय्यद साहब ने अर्ज किया हुजूर के मकान में है। फरमाया तो मुझे कोई उज्र नहीं, क्या दरकार है? सय्यद साहब ने अर्ज किया सिर्फ 22 गज कफन के लिये कपड़ा चाहता हूँ चुनांचे सुबह बाजार खुलते ही 22 गज कफन मंगवा कर सैय्यद साहब के नज्र कर दिया गया।

इन्हीं का बयान है आप के काशाना—ए—अकदस से कोई हाजत मन्द खाली नहीं जाता था।

आला हज़रत और हक़ गोई

एक साहब रामपुर से हज़रत मौलाना नकी अली खाँ साहब का नाम सुन कर एक फतवा लेकर हाजिर हुए। जिसमें मौलाना इरशाद हुसैन साहब मुजद्दिदी का पर बहुत से उलमा की मुहरें थीं और दस्तखत थे। हज़रत ने फरमाया कि कमरे में मौलवी साहब हैं उनको दे आयें जवाब लिख देंगे। वह कमरे में गये और वापस आकर अर्ज कियाकि कमरे में मौलवी साहब नहीं हैं। फकत एक शहजादे बैठे हैं। हज़रत ने फरमाया एन्हीं को दे दें। वह कल लिख देंगे। उन्होंने कहा कि हुजूर मैं तो आपका शोहरा सुनकर आया हूँ। हज़रत ने फरमाया आज कल वही फतवा लिखते हैं। उन्हीं को दे दें, गर्ज दे दिया। आला हज़रत ने जो फतवे को देखा तो ठीक न था। आपने उस जवाब के खिलाफ़ जवाब तहरीर फरमा कर अपने वालिदे माजिद की खिदमत में पेश किया, हज़रत ने तसदीक फरमा दी। वह साहब फतवा लेकर रामपुर पहुंचे जब नवाब रामपुर की नजर से जेवाब गुजरा तो शुरू से आखिर तक इस फतवे को पढ़ा और मौलाना इरशाद हुसैन साहब को बुलाया आप तशरीफ लाये तो फतवा आपकी खिदमत में पेश किया मौलाना की हक पसन्दी व हक गोई मुलाहिजा हो साफ फरमाया कि वही हुक्म सही है जो बरेली से आया है।

नवाब साहब ने पूछा फिर इतने उलमा ने आपके जवाब की तसदीक क्यों कर दी फरमाया "इन हजरात ने मुझ पर मेरी शोहरत की वजह से ऐतमाद (भरोसा) किया और मेरे फतवे की तसदीक कर दी। फरमाया हक वही है जो उन्होंने लिखा है"। ये सुनकर दूसरे यह मालूम करके कि आला हज़रत की उम्र 19/20

साल की थी नवाब साहब को मुलाकात का शौक हुआ। आला हज़रत अपने सुसर जनाब शेख फजल हुसैन साहब के साथ रामपुर तशरीफ ले गये। जिस वक्त आप नवाब साहब के यहाँ पहुँचे आप जिस्मानी तौर पर कमजोर थे आपको नवाब ने देखकर बहुत ताअज्जुब किया। और चाँदी की कुर्सी पेश की आपने फरमाया ''मर्द को चाँदी इस्तेमाल हराम है''। यह सुन कर नवाब साहब कुछ शर्मिंदा हुए और अपने पलंग पर बैठा लिया। और बहुत खुलूस व महब्बत से बातें करने लगे इस दरमियान नवाब साहब ने मशवरा दिया कि माशा अल्लाह आप फिकाह व दीनीयात में बहुत कमाल रखते हैं। बहतर हो कि मौलाना अब्दुल हक़ साहब खैराबादी से मनतिक के ऊपर की किताबें पढ़ लें। आपने फरमाया जनाब वालिद साहब ने इजाजत दी तो जरूर तकमील-ए-इरशाद की जाएगी, इसी दर्मियान इत्तेफाक से मौलाना अब्दुल हक साहब भी तशरीफ ले आये। नवाब साहब ने आला हज़रत से तअर्रूफ और अपनी राये का इजहार किया। आला हज़रत से अल्लामा खैराबादी ने पूछा मनतिक की किताब कहाँ तक पढ़ी है? आला हज़रत ने फरमाया काजी-ए-मुबारक यह सुनकर अल्लामा खैराबादी ने शायद उम्र को देखकर मजाक ख्याल किया और पूछा कि कहीं तहजीब भी पढ़ी है। जिस ताने से मौलाना ने सवाल किया उसी अन्दाज में आपने जवाब दिया ''क्या आपके यहाँ काजी-ए-मुबारक के बाद तहजीब पढ़ाई जाती है'' यह जवाब सुनकर मौलाना ने ख्याल किया यह भी कुछ है। इस लिये इस बात को छोड़कर दूसरा सवाल किया कि बरेली में आपका किया शगल है? फरमाया तसनीफ, इफ्ता कहा किस फन में

तसनीफ करते हैं, आपने फरमाया जिस मसअले दीनीयात में जरूरत देखी और रद्दे वहाबिया करते हैं। मौलाना ने कहा कि एक वह हमारे बदायूँ खबती है हर वक्त इसी में मुबतिला रहते हैं। यह मौलाना शाह अब्दुल कादिर साहब बदायूनीं की तरफ इशारा था।

आला हज़रत उनकी हिमायत दीन की वजह से बहुत इज्जत करते थे। इस लफ्ज को सुनकर नाराज हुए ''जनाब-ए-वाला सबसे पहले वहाबियों का रद्द हज़रत मौलाना फजले हक साहब रहमतुल्लाहे तआला अलैह और आपके वालिद माजिद ने किया और एक किताब इस्माईल देहलवी के रद्द में तसनीफ फरमाई''। मौलाना अब्दुल हक साहब ने फरमाया अगर ऐसी हाजिर जवाबी मेरे मुकाबले में रही तो मुझ से पढ़ना नहीं हो सकता। आला हज़रत ने फरमाया आपकी बातें सुनकर पहले ही फैसला कर लिया था कि ऐसे शख्स से मनतिक पढ़ना अपने उलमा-ए-अहलेसुन्नत की तौहीन होगी। इसी लिये पढ़ाई का ख्याल दिल से दूर कर दिया था। तब आपकी बात का जवाब दिया।

एहतिराम-ए-मस्जिद

एक बार हुजूर आला हज़रत बहालत ऐतकाफ अपनी मस्जिद में थे। शब का वक्त जाड़े का मौसम और इस वक्त देर से शदीद बारिश मुसलसल हो रही थी। हुजूर को नमाजे इशा के लिये वुजू करने की फिक्र हूई कि पानी, मगर बारिश में किस जगह बैठ कर वुजू किया जाये। बिल आखिर मस्जिद के अन्दर

लिहाफ की चादर तह करके इस पर वुजू किया और एक कतरा पानी मस्जिद के फर्श पर नहीं गिरने दिया और पूरी रात जाड़े की और उस पर हवा बारिश का तूफान यूँ ही जाग कर ठिठुर कर काट दी।

वरसात का मौसम था रात को हवा के तेज झोंके ने मस्जिद के कढ़वे तेल के चिराग को बार बार बुझा देते जिसके रौशन करने में बारिश की वजह से सख्त तकलीफ होती, जिसकी वजह यह भी थी खारिज-ए-मस्जिद में दिया सलाई जलाने का हुक्म था, इस जमाने में नारों की दिया सलाई इस्तेमाल की जाती जिसके रौशन करने में गन्धक की बदवू निकलती थी, लिहाजा इस तकलीफ को देखकर हाजी किफायत उल्लाह साहब ने एक लालटेन मामूली चार शीशे लगवा कर उस में अन्डी का तेल डलवा कर और रौशन करके हुजूर के साथ साथ मस्जिद के अन्दर लाकर रख दी। थोड़ी देर में हुजूर की नजर उस पर पड़ी, हाजी साहब आपने यह मसअला बार बार सुना होगा मस्जिद में बदबू का तेल नहीं जलाना चाहिये। उन्होंने अर्ज किया हुजूर उसमें अन्डी का तेल है। फरमाया राहगीर देखकर कैसे समझेंगे कि इसमें अन्डी का तेल जल रहा वह तो यही कहेगें कि दूसरों को तो फतवा दिया जाता है कि मिटटी का बदबू दार तेल न जलाओ और खुद मस्जिद में लालटेन जला रहे हैं। हाँ अगर आप इसके बराबर बैठकर यह बात कहते रहें इसमें अन्डी का तेल है तो हर्ज नहीं। चुनांचे हाजी साहब ने फौरन लालटेन गुल करके फौरन खारिजे मस्जिद कर दिया।

आला हज़रत की औलाद

आपके वैसे तो सैकड़ों खुलफा व तलामिज़ा बर्रे सगीर, यूरोप, अरब में रहकर दीन की खिदमत की वहीं आपके दो साहिबज़ादगान हुज्जतुल इस्लाम मौलाना हामिद रज़ा खाँ और मफती आज़मे हिन्द मौलाना मुस्तफा रज़ा खाँ रहमतुल्लाहिम ने खूब दीन की इशाअत की।

आला हज़रत मुसलमानों के सच्चे बेही ख्वाह थे

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा रदियल्लाहो तआ़ला अन्हु मुसलमानों के सच्चे हमदर्द और बेही ख्आह थे। आपका क़ल्बे मुबारक अहले सुन्नत व जमाअत की मुहब्बत व ख़ैर ख्आही के जज़बात से लबरेज़ था। आप की जिन्दगी का एक एक लम्हा उनके अकाइद की हिफाज़त, आमाल की इस्लाह और इरशाद व हिदायात के लिए वक्फ था। आपके शब व रोज़ उनकी दीनी गुथ्थियाँ सुलझाने में सर्फ होते थे। जब भी कोई फितना उठता जिससे मुसलमानों के अकाइद में जोफ का अन्देशा हो या उनकी ग़लत रवी व बद अमली का खतरा हो तो आपका कलम फौरन हरकत में आ जाता और इस फितने का सदबाब फरमाते। आप हर उस तहरीक की शिद्दत से मुखालिफत फरमाते जो इस्लामी नज़रियात से मुतसादिम हो ख्आह वह किसी रंग व रूप में सामने आये। आपकी सैकड़ों किताबें और रिसाइल इस हकीकत पर शाहिद व अदल हैं।

मुफक्करे अहले सुन्न्त हज़रत अल्लामा यासीन अख़्तर

साहब मिसबाही लिखते हैंः हज़रत फाजिले बरेलवी ने दाखिली और खारजह मुहाज़ पर वक्त के हौलनाक फितनों की बीख़ कुनी की। और बातिल कुव्वतों के चढ़ते हुए तूफानों के सिदबाब के लिये जिहाद बिलकलम का इतना शानदार और गिराँ कद्र फरीज़ा अन्जाम दिया जिसकी मिसाल मुश्किल से मिलेगी। मुसलमानों की इसलाह व तरबियत और इरशाद व हिदायत के लिये आपने जुबान व कलम के जरिये हर तरह की खिदमत अन्जाम दी। (41)

आपकी हमेशा यही कोशिश रही कि मुसलमानों के कुलूब खुदा और रसूल की अज़मत के आमिल हों। वह बाद-ए-हुब्बे रसूल से सरशार हों। कि यही उनके लिये दीनी व दुनियावी सर खुरूई व सरबुलन्दी का जरिया है। दावाये मुहब्बत खुदा और रसूल और उनके आदा (दुश्मन) और गुस्ताखों से नफरत व अदावत न रखना, मुसलमान इस तजाद से पाक हों। बिला शुबह आपकी हयाते मुबारका ''अद्दीनुन्नसह'' (दीन खैर ख्आही का नाम है) का अमली नमूना थी।

सरकार आला हज़रत दीन की खिदमात की अन्जाम दही में किस कदर मसरूफ रहते थे। इस का अन्दाजा आपकी इस तहरीर से होता है।

मौलाना मुहर्रम अली साहब चिशती सदर सानी अन्जुमन नोमानिया लाहौर आपको लिखते हैंः-

बावुजूद अराकीन अन्जुमन को आँजनाब के साथ ऐसा वली खुलूस और नियाज होने के जनाब की तरफ से किसी खास इत्तिफात का उसकी निसबत जुहूर न हुआ।

आप जवाब देते हैंः-

मौलाना इस फकीर के जिम्मा कामों की बेइन्तेहा कसरत है। और इस पर नकाहत व जुउफ की कुव्वत, और इस पर महिज तनहाई व वहदत, ऐसे उमूर हैं कि फकीर को दूसरे कामों की तरफ मुतावज्जह होने से मजबूराना बाज रखते हैं। खुद अपने मदरसा में कदम रखने की फुरसत नहीं मिलती। यह खिदमत कि फकीर सरापा तकसीर से मेरे मौला-ए-करीम सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम महिज अपने करम से ले रहे हैं अहले सुन्नत व मजहब अहले सुन्नत की ही खिदमत है। जो साहब चाहते हैं, जितने दिन चाहें, फकीर के यहाँ इकामत फरमायें। महीना दो महीना, साल दो साल, और फकीर का जो मिनट खाली देखें या जिस वक्त फकीर को कोई जाती काम करते देखें उस वक्त मवाख़िज़ह फरमायें कि तू इतनी देर में दूसरा काम कर सकता था (42)

और मुसलमानों के साथ उनकी खैर ख्आही व हमदर्दी का यह आलम है कि दिन का आराम और रात की नींद कुरबान करके और अपना खून जिगर जला कर उनकी इस्लाह व तरबियत और इरशाद व हिदायत के लिये किताबें भी तसनीफ फरमाते हैं। और फिर बिला मुआविजा उनको तकसीम फरमाते हैं। हत्ता कि बाहर वालों को अपने ही खर्च से रवाना भी फरमाते हैं अन्जुमन नोमानिया को लिखते हैंः-

नियाज मन्द की चार सौ तसानीफ़ से सिर्फ़ ऊपर सवाब तक मतबू हुईं। और हजारों की तादाद में बिला मुआविजा तकसीम हुआ कीं। जिसके सबब जो रिसाला छपा जल्द खत्म हो गया। बाज तीन तीन और चार चार बार छपे। अन्जुमन नोमानिया में गालिबन रमजानुल मुबारक

20हि० में उस वक्त तक के तमाम मौजूदा रसाइल मैंने खुद हाजिर किये हैं और अन्जुमन से रसीद भी आ गई। उनकी फहरिस्त अब फकीर को याद नहीं गालिबन दफ्तर अन्जुमन में हो। अगर वह मालूम हो जाये तो बकिया रिसाइल जो इधर छपे और मतबा में उनके नुस्खे रहे विर्रास वलऐन नजर अन्जुमन बिला मुआविजा होंगे। दो बरस से अनान मतबा एक अन्जुमन ने अपने हाथ में ली है। जिसने तरीकये फकीर, तकसीम कसीर बिला मुआवजा को मनसूख कर दिया। फिर भी अन्जुमन नोमानिया के लिये हद यतन हाजिर करने से अन्जुमन को भी इनकार नहीं हो सकता। (43)

मौलवी अहमद बक्श साहब डेरा गाजी खान ने अकीदए दयाबना "इमकान किज्ब बारी तआला" के बारे में एक सवाल किया। और इस मौजू पर किताबें भी तलब फरमाईं। आला हज़रत भवाली में कयाम पजीर। वहीं से उन के सवाल का जवाब देते हैं। और तहरीर फरमाते हैं मैं मतबा को लिख दूगां कि यह (अलकम उल मोबीन लामालुल मकज़बीन) और "सुब्हानस्स सुब्बूह" हद यतन खिदमत में बनज़र इहतियात बैरंग करे। (44)

और अखलाक़ व ईसार और कुबानी की यह शान कि तनख्आह और बदले खिदमत तो बड़ी चीज़ है। अकीदत केशों की नजर कुबूल करना भी उनके लिये न गवार-ए-खातिर था।

शैख हाजी नादिर अली साहब कलकत्ता भवानी पुर ने अपने इस्तफते के आखिर में लिखाः जो फरमादें खर्च वगैरह के लिये तो गुलाम खिदमत में हाजिर है। आला हज़रत ने जवाब दियाः यहाँ फतवे पर खर्च नहीं लिया जाता। न उसको अपने हक में रवा रखा जाता है। (45)

फुयोज़ व बरकात

आला हज़रत रदियल्लाहो तआला अन्हु की सुहबत के फुयोज व बराकात का यह आलम था कि आपके यहाँ के खुददाम बल्कि खादिमों के छोटे छोटे बच्चे मसाइले दीनिया से ऐसे वाकिफ थे कि बाज औकात उनकी मालूमात को देखकर बड़े बड़े उलमाये-ए-किराम अन्गुश्ते बदन्दाँ रह जाते थे। एक दफआ का वाकिया है कि एक बहुत बड़े आलिम जिनका हिन्दुस्तान के अकाबिर उलमा में शुमार था। आला हज़रत रदियल्लाहो तआला अन्हु के फुजाइल व कमालात का शोहरा सुनकर मुलाकात के लिये बरेली तशरीफ लाये।

नमाजे अस्र का वक्त था और जमाअत खड़ी हो चुकी थी मस्जिद के कुऐं पर भिश्ती का नाबालिग लड़का पानी भर रहा था। मौलाना साहब ने जल्दी में उस लड़के से पानी मांगा। उस लड़के ने अर्ज किया मौलाना साहब मेरे दिये हुये पानी से आपका वुजू करना दुरूस्त नहीं। मौलाना को जमाअत में शरीक होने की जल्दी थी। लड़के की गुफतगू सुनकर गुस्सा आ गया। और फरमाया जब हम तुझ से पानी मांगते हैं तो क्यों नहीं देता लड़के ने अर्ज किया कि मुझे देने का इखतियार नहीं है। इस लिये कि मैं नाबालिग हूँ उस की यह गुफतगू सुनकर मौलाना को और भी गुस्सा आया और फरमाया कि तू जिन लोगों के यहाँ पानी भरता है वह कैसे वुजू करते होगें लड़के ने अर्ज किया हुजूर नाराज न हों वह लोग मुझसे पानी मोल लेते हैं। मौलाना तो आखिर आलिम थे मसअले का खयाल आ गया फौरन खुद कुएं से पानी निकाला

और खुद वुजू करके जमाअत में शरीक हो गये।

जब नमाज से फारिग हुये तो आला हज़रत रदियल्लाहो तआला अन्हु की खिदमते अकदस में हाजिर हुये और कदम बोसी के बाद अर्ज किया कि हुजूर मैं तो आपके फजलो कमाल का शुहरा सुना करता था। लेकिन यहाँ हाजिर होकर मालूम हुआ कि इस दरवार के खिदमत गारों के वच्चे भी मुफ्ती हैं।

जूद व करम

आला हज़रत रदियल्लाहो तआला अन्हु की सखावत और जूदो करम का यह आलम था कि आपके दर से कोई साइल नामुराद और महरूम नहीं जाता था। हर हाजत मन्द की हाजत और तकलीफ ज़दह की तकलीफ देख कर दरयाए सखावत जोश में आ जाता था।

(1) एक दिन मौसमे सरमा में जनाव ज़काउल्लाह खाँ साहव को देखा कि उनके पास ओढ़ने को कोई चीज नहीं है आपने फौरन अपनी रज़ाई उतार कर अता कर दी।

(2) जनाव जकाउल्लाह साहब का बयान है कि इस वाकिया के वाद आला हज़रत की नई रज़ाई तैयार होकर आ गई। उसे दो चार दिन ही ओढ़े हुए गुजरे थे कि एक मुसाफिर रात के वक्त मस्जिद में आये और अर्ज किया कि मेरे पास ओढ़ने को कुछ नहीं है आप ने वह नई रज़ाई उस मुसाफिर को अता फरमादी।

(3) बरसात के जमाने में वाज़ औक़ात तुर शख़ की वजह से मस्जिद की हाजिरी में तकलीफ होती थी। हाजी किफायतुल्लाह

साहव ने एक छतरी खरीद कर नज़र की। एक दिन एक जरूरत मन्द ने छतरी का स्वाल किया। आपने वह छतरी साइल को अता करदी।

(4) सैय्यद अय्यूव अली साहव के वालिद वीमार थे और उसरत व तन्गदस्ती का आलम था। आप ने सैय्यद साहव को दस रूपये अता किये और फरमाया दवा के लिये दे रहा हूँ।

(5) मुवल्लिगे इस्लाम हज़रत मौलाना शाह अब्दुल अलीम साहव मेरठी रहमतुल्लहि तआला ने जियारत हरमैन शरीफैन से वापसी पर आला हज़रत की खिदमत में हाजिर होकर एक मनकवत पढ़कर सुनाई इरशाद फरमाया मैं आपकी खिदमत में किया पेश करूँ। फिर अपने अमामऐ मुवारका की तरफ इशारा करके फरमाया कि आप उस दयारे पाक से आये हैं कि यह अमामा आप के कदमों के लाइक भी नहीं। फिर आपने एक सुर्ख काशानी मखमली वेश कीमत जुब्बा लाकर अता फरमाया। जो डेढ़ सौ रूपये से कम कीमत का न था। हज़रत मौलाना अब्दुल अलीम साहव रहमतुल्लहि अलैह ने सरू कद होकर लिया। चूमा सर पर रखा और आँखों से लगा लिया।

(6) आप हर साल फरदें तैयार कराकर गरीबों को तकसीम फरमाते थे। इस साल की फरदें तकसीम हो चुकी थीं। एक साइल ने हाजिर होकर फरद की दरख्आस्त की। आपने अपनी नई वेशकीमत फरद उतार कर उसे दे दी।

आला हज़रत रदियल्लाहो तआला अन्हु की दादो दहश के ऐसे हजारों वाकियात हैं अलावा अजीं आपने वेवाओं और महताजों के वजाइफ मुकर्रर फरमा दिये थे। और दूसरे मुकामात पर इमदाद की रकमें मनी आर्डर से रवाना फरमाते थे।

(7) एक दफआ मदीना तैय्यवा एक साहब की खिदमत में पचास रूपया रवाना फरमाना था इत्तेफाकन उस वक्त हुजूर के पास कुछ न था। आप ने बारगाहे रिसालत में रूजूअ किया। सुवह के वक्त एक सेठ साहब आस्ताना पर हाजिर हुये और मुवलिग 51 इकयावन रूपया हज़रत मौलाना शाह हसनैन रज़ा खाँ साहब किवला के जरिये वतौर नजराना पेश किया। उस वक्त आला हज़रत पर रिक्कत तारी हो गई और मजकूरह वाला जरूरत का इनकिशाफ फरमाया। फिर इरशाद फरमाया कि यह यकीनन सरकार का अतिया है इस लिये कि इकियावन रूपये मिलने का इस के सिवा कोई मतलव नहीं कि पचास रूपये भेजने के लिये मनी आर्डर फीस भी चाहिये। चुनाँचे पोस्ट ऑफिस खुलते ही मनी ऑर्डर रवाना कर दिया गया।

(8) एक दिन सैय्यद महमूद जान साहब ने अर्ज किया कि हुजूर जो मांगूं वह अता फरमा दें। आला हज़रत ने इरशाद फरमाया सैय्यद साहब अगर मेरे इमकान में हुआ तो हाजिर कर दूंगा। सैय्यद साहब ने अर्ज किया हुजूर के इमकान में है। इरशाद फरमाया अगर इमकान में है तो मुझे उर्ज नहीं फरमाइये। क्या दरकार है। सैय्यद साहब ने अर्ज किया सिर्फ वाईस 22 गज कपड़ा कफन के लिये चाहता हूँ। चुनाँचे वाईस गज नैन क्लाथ मंगा कर सैय्यद साहब को नजर फ़रमा दिया।

आला हज़रत जव जवलपुर तशरीफ फरमा हुये तो अब्दुस्सलाम हज़रत मौलाना शाह अब्दुस्सलाम साहब रहमतुल्लहि अलैह ने मुवलिग एक हजार रूपया सफेद चीनी की काव में रख कर आला हज़रत रदियल्लाहो अन्हु की खिदमत में वतौर नजर पेश फरमाया जिसे कुवूल फरमाते हुये इरशाद फरमाया कि

मौलाना इस वक्त तक आपने जो सर्फ किया वही क्या कम किया था। फिर हाजी किफायतुल्लाह साहब से फरमाया इसे रख लो और वजीफे की सन्दूकची उठा लाओ। हाजी साहब ने वह रूपये सामने कमरे में रख दिये और वजीफे की हश्त पहिल सन्दूकची पेश की। जिसकी लम्बाई एक फुट से कम थी। यह वही सन्दूकची थी जो आपको आपके शैख से मिली थी। उसमें सिर्फ वजीफे की किताव रहती थी जिसे आप सुवह की नमाज के वाद पढ़ा करते थे। आपने उस सन्दूकची को इस तरह खोला कि ढकना वाईं हाथ से झुकाये रखा। देखने वालों का वयान है कि आप दायाँ हाथ वार वार डालते और रूपया निकालते और फरदन फरदन हज़रत मौलाना के मुलाजिमों, खादिमों और रज़ा कारों पर निहायत फराख दिली फरमाते थे।

फिर हज़रत मौलाना शाह अब्दुस्सलाम साहब रहमतुल्लहि अलैह की वहू यानी हज़रत मौलाना शाह वुरहानुल हक साहब दामत वरकातहुम की अहिलया और वच्चों के लिये तलाई जेवरात और सवसे छोटे वच्चे के लिये सिला हुआ कुर्ता टोपी यह सव कुछ इसी सन्दूकची से वर आमद हुआ। हालांकि यह सन्दूकची वजीफा पढ़ने के दौरान सफर में वारहा देखी गई। जिसमें वजीफे की किताव के सिवा कुछ भी नजर न पड़ा यह वाकिया जिस तरह आपके जूदो सखा की दलील है।

करामत

(1) एक शख्स वरेली में रहते थे। वड़े आजाद ख्याल थे।

पीरी मुरीदी को पेट भरने का ठकोसला बताते थे। उन के खानदान के कुछ लोग आला हज़रत के मुरीद थे। एक दिन उन लोगों ने इन आजाद ख्याल साहब को मजबूर किया कि चलो आला हज़रत की जियारत करो। ताकि यह लगु ख्यालात तुम्हारे दिल से दूर हों। मजबूरन चले रास्ता में देखा कि हलवाई की दुकान पर गरम गरम इमरतियां बन रही हैं। बोले अगर इमरतियां खिलाओ तो चलूं। उन हजरात ने कहा कि नेक काम में देर मत करो। चले चलो। वापसी में खिला देगें। यह आजाद ख्याल वापसी में खिलाने का वादा लेकर चले। और आला हज़रत की खिदमत में आकर बैठ गये। थोड़ी देर के बाद एक साहब मुरीद होने के लिये हाजिर हुये। और टोकरी में गरम गरम इमरतियां लाकर रखदीं फातिहा के बाद तकसीम की गईं।

आला हज़रत के यहाँ का मामूल था कि दाढ़ी वालों को डबल हिस्सा और वे दाढ़ी वालों को बच्चे के हिस्से की तरह एक एक हिस्सा दिया जाता था। लेहाजा इन आजाद ख्याल को भी एक इमरती रख दी गई। आला ने फरमाया इन को दो दे दीजिये। लोगों ने अर्ज किया हुजूर इनके दाढ़ी नहीं है। फरमाया गरम गरम इमरतियों को इनका दिल चाहता था। इनको दे दीजिये आला हज़रत की इस करामत को देखकर वह वह साहब ऐसे मोतकिद हुए कि चन्द रोज के बाद पक्के दीनदार बन गये और उलमा व मशाइख की ताजीम करने लगे।

(2) एक मरतबा सैय्यद कनाअत अली साहब बेहोश हो गये होश में लाने की हर मुमकिन कोशिश की गई। लेकिन होश न आया आला हज़रत रदियल्लाहो तआला अन्हु ने उनका सर अपने जानो पर रख कर अपना रूमाल चहरे पर डाल दिया फौरन होश आ गया और आंखें खोल दीं।

(3) एक मरतबा आला हज़रत को हाजी साहिबान के इस्तक़बाल के लिये स्टेशन जाना था फिटन आने में देर हुई। मिस्त्री गुलाम नबी साहब किसी से कहे बगैर तांगा लेने बाजार चले गये। जब तांगा लेकर लौटे तो दूर से देखा कि फिटन खड़ी है। वहीं उतर गये और चार आना दे कर तांगा को रूख्सत कर दिया इस वाकिया का किसी को इल्म न था तीन चार दिन के बाद जब मिस्त्री साहब हाजिर हुये तो आला हज़रत ने एक चवन्नी दे कर फरमाया उस रोज तांगा वाले को आपने दे कर रूख्सत कर दिया था। मिस्त्री गुलाम नबी साहब हैरत में रह गये।

(4) एक औरत जो आला हज़रत की मुरीदह थी। एक दिन हाजिर हुई और अर्ज किया कि हुजूर मेरा खाविन्द डाक खाना में मुलाजिम था। मनी ऑडर गलत तकसीम हो जाने के जुर्म में सज़ा हो गई थी इलाहाबाद में अपील दाइर की गई है। फैसला की तारीख करीब है। कुछ पढ़ने को बताये और हुजूर दुआ फरमाइये आप ने फरमाया

حسبنا الله ونعم الوكيل

बकसरत पढ़ो। वह कई मरतबा खिदमत में हाजिर हुई और

आप ने हर मरतवा वही फ़रमाया कि ''हसवुनल्लाहो वनेमल वकील'' कसरत से पढ़ा करो यहाँ तक कि फैसला की तारीख आ गई। वह मुरीदह हाजिर हुई और अर्ज किया हुजूर आज तारीख है फरमाया बता तो दिया वही पढ़े जाओ किया मैं खुदा से लड़ूँ वह बीबी परेशानी के आलम में यह कहती हुई चलदीं कि जब अपना पीर ही नहीं सुनता तो फिर कौन सुनेगा। उनकी यह कैफियत देख कर आल हज़रत ने उन्हें बुलाया और आहिस्ता से फरमाया छूट तो गया। आला हज़रत की जुवान मुवारक से यह वात सुनते ही उन बीबी की खुशी की इन्तिहा न रही जव घर के करीव पहुँची तो वच्चे दौड़े हुये आये कि आप कहाँ थीं तार वाला ढूंडता फिर रहा है। फौरन घर पहुँची तार लिया। पढ़वाया तो मालूम हुआ कि खाविंद वरी हो गया।

(5) जनाव अमजद अली खाँ साकिन भैंसोड़ी शिकार को गये। गोली गलतीं से आदमी को लग गई और मर गया। अमजद अली गिरफतार हो गये। पुलिस ने आप पर कत्ल अमद सावित कर दिया। और फाँसी का हुक्म हो गया तारीख से कुछ पहले लोग मुलाकात के लिये गये और रोने लगे। अमजद अली ने कहा आप लोग जाओ। आराम करो। इस तारीख को मैं घर पर आकर मिलूंगा। मेरे मुरशिदे वर हक आला हज़रत ने रात फरमा दिया है कि हमने तुझे छोड़ दिया। सव लोग चले गये। फांसी की तारीख पर वालिदा मिलने गईं। उन से भी कहा कि घर जाइये, मैं आकर नाश्ता करूंगा, इसके बाद उन्हें फांसी घर लाया गया और पूछा गया कि अगर कुछ ख्आहिश हो तो कहो, बोले, पूछ कर किया करोगे। मेरा वक्त अभी नहीं आया है। सब हैरत में थे। इतने में तार आता है कि मलिका विक्टोरिया की ताज

पाशी की खुशी में इतने खूनी और इतने कैदी छोड़ दिये जायें फौरन अमजद अली को रिहा कर दिया गया।

(6) एक श्ख्स ने अर्ज किया कि हुजूर कल गरीव खाने पर खाना तनावुल फरमायें। आपने उनकी दावत कुवूल फरमा ली। दूसरे दिन गाड़ी आई और आला हज़रत उनके मकान पर तशरीफ ले गये। मौलाना जफरूद्दीन साहव विहारी आपके हमराह गये। जो खाना सामने आया तो सालन में सिर्फ कीमा था और वह भी गालिवन गाये के गोश्त का था। मौलाना जफरूद्दीन साहव किवला के दिल में ख्याल गुजरा कि गाये के गोश्त आला हज़रत को कीमा नुकसान देता है। आप कैसे तनावुल फरमायेंगे। फौरन आला हज़रत ने फरमाया हदीस में है

بسم الله الذی لا یضر مع اسمه شی فی الارض ولا فی السماء وهو السمیع العلیم.

''विसमिल्लाहिल्लजी लायदुर्रो मआ इसमिही शैउन फिलअरजे वला फिस्समाये वहुवस्समी उलअलीम'' पढ़कर मुसलमान जो कुछ खायेगा। हर गिज नुकसान न देगा। मौलाना जफरूद्दीन साहव किवला फरमाते हैं कि मेरे दिल में जो खतरा गुजरा हुआ था यह उसका जवाव था।

(7) आला हज़रत की मझली साहिवजादी साहिवा मरहूमा इलाज के लिये नैनीताल में मुकीम थीं। यह कम व वेश तीन साल से ऐसी सख्त अलील थीं कि वार हा मायूसी हो चुकी थी। आला हज़रत रदियल्लाहो अन्हु जव नमाज ईद पढ़ाने नैनीताल तशरीफ लाये तो साहिवजादी साहिवा ने शिखद्दते मर्ज की कैफियत वयान की आपने सुन कर चलते वक्त फरमाया मै इन्शाअल्लाह तुम्हारा दाग न देखूंगा। हालाकि वह

उस वक्त बहुत सख्त अलील थीं और आला हज़रत के विसाल के बाद सिर्फ 27 दिन जिन्दा रहीं।

(8) आला हज़रत रदियल्लाहो अन्हु ने विसाल के दिन इरशाद फरमाया पिछले जुमा में कुरसी पर जाना हुआ था। आज चारपाई पर जाना होगा। यह भी फरमाया कि मेरी वजह से नमाजे जुमा में ताख़ीर (देर) न करना चुनांचे इरशाद के मुताबिक ही हुआ। नमाज जुमा से पहले हुजूर का विसाल हो गया। हस्बे वसय्यत पहले नमाजे जुमा अदा की गई। फिर आपके जनाजे मुबारका को चारपाई पर लाया गया। और नमाजे जनाजा अदा की गई।

मामूलात

(1) आप फराइजे पन्जगाना हमेशा जमाअत के साथ मस्जिद अदा फरमाते थे।

(2) आप फर्ज नमाज हमेशा अमामा बान्ध कर अदा फरमाते थे।

(3) आप अमामा हमेशा खड़े होकर बान्धते थे।

(4) आप मस्जिद में दाख़िल होते वक़्त पहले दायां क़दम मस्जिद में रख़ते, और सलाम में सबकत फरमाते थे।

(5) आप की आदत थी कि मस्जिद से वापस होते वक्त अमामा उतार कर बगल में दबा लेते थे।

(6) आप ज्यातर जनाना मकान में तशरीफ रखते थे। ताकि लोगों की आमद व रफ्त और बिला तकल्लुफ जरूरत गुफ्तगू से दीनी खिदमात अन्जाम देने में खलल वाके न हो।

(7) अगर कोई साहब शहर से या बाहर से मुलाकात के

लिये आते और इतला की जाती तो तकल्लुफ बाहर तशरीफ लाते और मुलाकात फरमाते थे।

(8) जब कोई मुसलमान आप से मिलने के लिये आता तो निहायत खन्दा पेशानी से मिलते, और पान वगैरह से खातिर मदारात फरमाते थे।

(9) आप अस्र की नमाज के बाद बाहर मरदाना मकान में तशरीफ रखते थे। ताकि इस्तेफादा करने वाले इस्तेफादा कर सकें। अलबत्ता जाड़े के मौसम में मस्जिद ही में तशरीफ रखते थे, और हाजिरीन एतकाफ की निय्यत कर के मस्जिद में हाजिर होते और मसाइले दीनिया दरयाफत करते थे।

(10) आप जुमा की नमाज के बाद भी मरदाना मकान में तशरीफ रखते थे ताकि बाहर से आने वाले हजरात मसाइल दरयाफत कर सकें।

(11) आप एक पाऊँ के जानू पर रख कर बैठने को ना पसन्द फरमाते थे।

(12) आप खत बनवाते तो शीशा और कंघा अपना इस्तेमाल फरमाते थे।

(13) आप लोहे के कलम और ऐसी दवात से जिस में सूफ न पड़ा हो। इजतिनाब करते थे।

(14) आप महफिले मीलादे मुबारक में शरीक होते तो शुरू से आखिर तक अदबन दोजानो बैठते थे। इसी तरह वाज फरमाते तो दो दो घन्टा दोजानो बैठ कर वाज फरमाते थे।

(15) आप पान खाते थे, लेकिन वाज या जिक्र की महफिल में बिल्कुल नहीं खाते थे।

(16) अगर आप किसी को कोई चीज इनायत फरमाते तो दायें

हाथ से इनायत फरमाते। अगर लेने वाला बायां हाथ बढ़ाता तो अपना दस्ते मुबारक रोक लेते और फरमाते कि सीधे हाथ से लीजिये। उलटे हाथ से शैतान लेना है।

(17) आप चलते तो आपके पाये मुबारक की चाप सुन्ने में नहीं आती थी। वसा औकात ऐसा होता था कि आप करीब तशरीफ लाकर सलाम फरमाते तो आप की तशरीफ आवरी का इल्म होता।

(18) आप लेटते तो इस तरह लेटते थे कि हुजूर अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के नाम नामी की शक्ल बन जाती थी।

(19) आप हफ्ता में दो मरतवा जुमा के दिन और पीर के दिन लिबास तवदील फरमाते थे और ईदैन और यौमुन्नवी के मौके पर जदीद लिबास जेवे तन फरमाते थे। इसके अलावा दीगर मवाके पर लिबास बदलने का इहतमाम न था।

आप शब व रोज में सिर्फ एक या डेढ़ सूजी का विस्कुट और एक प्याली बगैर मिर्च का बकरी का शेरवा तनावुल फरमाते थे। और उसमें भी कभी नागा हो जाता था।

मौलवी मोहम्मद हुसैन साहब मेरठी का बयान है कि आला हज़रत रमजान के आख़ीर अशरा में मस्जिद में मोतकिफ थे। आप इफतार के वक्त सिर्फ पान खाते थे। मैंने किसी दिन भी के शाम को खाना खाते नहीं देखा। शाम के वक्त एक छोटे से प्याले में फीरीनी और एक प्याली में चटनी आया करती थी, एक दिन मैंने दरयाफत किया कि हुजूर फीरीनी और चटनी का क्या जोड़ है। आपने इरशाद फरमाया कि नमक से खाना शुरू करना और नमक ही पर खत्म करना सुन्नत है। इस लिये यह चटनी आती है।

कुरबे विसाल

विसाल से दो दिन पहले शदीद लरज़ा हुआ। हकीम साहब को नब्ज दिखाई हकीम साहब को नब्ज नहीं मिली। इरशाद हुआ नब्ज की किया हालत है। अर्ज किया जुउफ की वजह से नहीं मिलती। इरशाद हुआ कि आज क्या दिन है? अर्ज किया गया चहार शम्बा है। इरशाद हुआ जुमा परसों है। फिर जुबान मुबारक पर बहुत देर तक

حسبنا الله ونعم الوكيل

"हसबोनल्लाहो वनेमल वकील" का विर्द जारी रहा। शबे जुमा को घरवालों ने बेदार रहने का इरादा किया। इरशाद हुआ रात को जागने की जरूरत नहीं। अर्ज किया गया शायद कोई जरूरत हो फरमाया इंशा अल्लाह तआला यह वह रात नहीं है। जो तुम्हारा ख्याल है। तुम सब सो रहो। शब गुजर गई। सुबहा के वक्त इरशाद हुआ। आज जुमा है। फिर फरमाया पछले जुमा कसे कुर्सी पर जाना हुआ, आज चारपाई पर जाना होगा। फिर इरशाद हुआ मेरी वजह से नमाजे जुमा में देरी न करना। फिर सफर की तैयारी शुरू हो गई। जाइदाद के मुतालिक वक्फ नामा मुकम्मल फरमाया। जाइदाद की चौधाई आमदनी मुसरिफे खैर में रखी। बाकी बरसा पर व हिसस शरई वक्फ अल्ल औलाद फरमाई। फिर वसीयत नामा मुरत्तव फरमाया।

(1) शुरू नज़अ के वक्त कार्ड, लिफाफे, रूपये पैसे या कोई ऐसी चीज जिस पर तसवीर हो दालान में न रहे।

(2) जुनूब या हाइजा दालान में न आये।

(3) कुत्ते को मकान में न आने दिया जाये।

(4) सूरए यासीन और सूरए रअद आवाज से पढ़ी जाये।

(5) कलमा तय्यबा आवाज से सीना पर दम आने तक बराबर पढ़ा जाये।

(6) कोई बुलन्द आवाज से बात न करे।

(7) कोई रोने वाला बच्चा मकान में न आये।

(8) वक्ते नजा मेरे और अपने लिये दुआये खैर कराते रहो।

(9) कोई बुरा कलमा जुबान से न निकले कि फरिश्ते आमीन कहते हैं।

(10) नजा में बर्फ का ये कोई ठन्डा पानी पिलाया जाये।

(11) रूह कब्ज होने के बाद

بسم الله وعلىٰ ملة رسول الله

''बिसमिल्लाहे वअला मिल्लते रसूल्लिलाह'' कह कर नरम हाथों से आँखें बन्द की जायें, और यही पढ़ कर हाथ और पाँव सीधे किये जायें।

(12) गुस्ल वगैरह सुन्नत के मुताबिक हो।

(13) जनाजा में बिला वजहे शरई ताखीर न हो।

(14) जनाजा उठने पर खबर दार कोई आवाज न निकले।

(15) जनाजा के आगे मेरी मदह का कोई शेर हर गिज न पढ़ा जाये।

(16) कफन पर कोई दोशाला वगैरह न हो।

(17) इसी तरह कोई काम खिलाफे सुन्नत न हो।

(18) कब्र में बहुत आहिस्तगी से उतारें, दाहिनी करवट पर वही दुआ पढ़ कर लिटायें, और पीछे नरम मिट्टी का पिश्तारा

लगायें।

سبحان الله والحمد لله ولا اله الا الله والله اكبر اللهم ثبت عبيد
ك هذابا لقول الثابت بجاه نبيك صلى الله عليه وسلم

''सुबहानल्लाहे वलहमदो ल्लिाहे वला इलाहा इल्ललाहो वल्लाहो अकबर अल्लाहुम्मा सब्बित उबैदिका हाजा बिलकौलि स्साबिते बजाहे नबीय्येका सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम''

(20) अनाज कब्र पर न ले जायें यहीं तकसीम कर दें ताकि कब्रस्तान में शोरो गुल और कब्रों की बे हुरमती न हो।

(21) दफन के बाद सरहाने الم مفلحون ''अलिफ लाम मीम मुफलेहून'' तक और पाएंती آمن الرسول ''आमनर्रसूल'' आखिर सूरह तक पढ़ें।

(22) बादे दफन (मौलाना शाह) हामिद रज़ा (खाँ सरहब) सात बार बुलन्द आवाज से अजान कहें।

(23)मुतालिकीन मेरे मुवाजिही में तीन बार तलकीन करें।

(24) डेढ़ घन्टा मेरे मुवाजिहि में दरूद शरीफ ऐसी आवाज से पढ़ते रहें कि मैं सुनूं फिर मुझे ارحم الراحمين ''अरहा मरराहेमीन'' की सुपुरद करके चले आयें। मेरे दो अजीज या दोस्त तकलीफ गवारह करें। तो तीन रात दिन कामिल पहरे के साथ मेरे मुवाजिहि में कुरआन मजीद और दरूद शरीफ आवाज से बिला वक्फा पढ़ते रहें। कि अल्लाह चाहे तो उस नये मकान से दिल लग जाये।

(25) बिल आखिर अपने वक्त का मुजदृदिद, आशिके रसूल ﷺ 25 सफर 1340हि0 1921ई0 में अपने पीछे लाखों अकीदत मन्दों मुरीदों को छोड़ कर रूख़सत हो गया।

वसीयत बराये फातिहा

अगर अइज्जा से बतवीब खातिर मुमकिन हो तो हफ्ते में दो तीन बार इन इशया पर फातिहा भेज दिया करें। (1) दूध का बर्फ खाना साज (2) मुर्ग की बिरयानी (3) मुर्ग पुलाओ (4) ख्आह बकरी का शामी कबाब (5) पराठे (6) और बालाई (7) फीरीनी (8) उरद की भरैरी दाल मा अदरक व दीगर लवाजिमात (9) गोश्त भरी कचौरियां (10) सेब का पानी (11) अनार का पानी (12) सोडे की बोतल (13) दूध का बर्फ अगर रोजाना एक चीज हो सके। यूं करो या जैसे मुनासिब समझो। फातिहा के खाने से अगनिया को कुछ न दिया जाये। सिर्फ फुकरा को इजाज और खातिर दारीह के साथ दें न कि झिड़क कर, गरज कोई बात खिलाफे सुन्नत न हो।

ग़रीब नवाज़ी

आला हज़रत रदियल्लाहो अन्हु की ग़रीब नवाज़ी देखिये कि तमाम उम्र महताजों की परवरिश फरमाई गरीवों को नवाजा। हत्ता कि विसाल के वक्त भी गरीबों को फरामोश न फरमाया, और उन नेमतों की जो उन्हें मयस्सर नहीं होतीं। उन के लिये वसीयत फरमा दी ताकि वह बेचारे भी उन नेमतों से लुत्फ अन्दोज हो सकें। मदरसा मन्ज़रे इस्लाम के तलबा को इलाक़ाई एतबार से अपने पसन्दीदा खाने के लिये खूब आज़ादी दी थी और जब कभी घर में कोई तक़रीब होती तो उनकी पसन्द के हिसाब से खाना तयार करवाते।

विसाल

दो बजने में चार मिनट बाकी थे, इरशाद हुआ किया वक्त है? अर्ज किया गया दो बजने में चार मिनट बाकी हैं, इरशाद फरमाया घड़ी खुली सामने रख दो, यका यक इरशाद हुआ, तस्वीरें हटा दो। (भला यहाँ तस्वीरें कहाँ) खुद इरशाद हुआ यही रूपया पैसा, कार्ड और लिफाफा, फिर जरा वक्फा से हज़रत हुज्जतुल इस्लाम मौलाना शाह हामिद रज़ा खाँ साहब से इरशाद हुआ कि वुज़ू कर के कुरआन-ए-करीम लाओ। अभी वह वापस न आये कि सय्यदी व मुरशिदी हज़रत शैखुल इस्लाम मौलाना शाह मुस्तफा रज़ा खाँ साहब दामत बरकातहुम से इरशाद फरमाया, अब बैठे किया करते हो। सूर-ए-यासीन शरीफ और सूर-ए-रअद शरीफ तिलावत करो। हसबुल हुक्म सय्यदी व मुरशिदी मुफती आजमे हिन्द ने तिलावत शुरू फरमादी।

अब उम्र शरीफ के चन्द मिन्ट बाकी हैं। इसके बावुजूद ऐसे तलफ्फुज़ और हुजूर कल्ब से तिलावत सुनी कि जिस आयत में जरा भी इश्तभा हुआ या सुन्ने में पूरी तरह न आई। या सबकत लिसानी से जेर व जबर में जरा भी फर्क हुआ तो खुद तिलावत फरमा कर बताई। सैय्यद महमूद जान साहब आ गये, आपने दोनों हाथ बढ़ाकर सैय्यद साहब से मुसाफा किया। सफर की दुआयें मामूल से जायद पढ़ते रहे। फिर कलमा तय्यबा पढ़ा अब सीना पर दम आया। होठों की हरकत और जिक्र पास अनफास खत्म होना था। कि चहरये मुबारक पर नूर का एक लम्आ चमका जिस में ऐसी जुमबिश न थी। जैसे लमआने खुरशीद आईना में जुमबिश करता है। उस का गायब होना था। कि रूहे अतहर जिस्म से परवाज कर गई।

انا لله وانا اليه راجعون "इन्ना लिल्लाहे वइन्ना इलैहि राजेऊन"

कलामे आला हज़रत

वाह क्या जूदो करम है शहे बतहा तेरा
नहीं सुनता ही नहीं मांगने वाला तेरा

धारे चलते हैं अता के वह है कतरा तेरा
तारे खिलते है सखा् के वह है जर्रा तेरा

फर्श वाले तेरी शौकत का उलू किया जानें
खुसरवा अर्श पे उड़ता है फरैरा तेरा

मैं तो मालिक ही कहूंगा कि हो मालिक के हबीब
यानी महबूब व मुहिब में नहीं मेरा तेरा

तेरे कदमों में जो हैं गैर का मुंह क्या देखें
कौन नजरों में चढ़े देख के तलवा तेरा

दिल अबस खौफ से पत्ता सा उड़ा जाता है
पल्ला हलका सही भारी है भरोसा तेरा

तेरे टुकड़ों से पले गैर की ठोकर पे न डाल
झिड़कियां खाएं कहां छोड़ के सदका तेरा

तेरे सदके मुझे एक बून्द बहुत है तेरी
जिस दिन अच्छों को मिले जाम छलकता तेरा

तेरी सरकार में लाता है रज़ा उसको शफी
जो मेरा गौस है और लाडला बेटा तेरा

नात शरीफ

चमक तुझ से पाते हैं सब पाने वाले
मेरा दिल भी चमकादे चमकाने वाले

बरसता नहीं देख कर अब्रे रहमत
बदों पर भी बरसादे बरसाने वाले

मदीने के ख़ित्ते खुदा तुझको रखे
ग़रीबों फ़कीरों को ठहराने वाले

तू ज़िन्दा है वल्लाह तू ज़िन्दा है वल्लाह
मेरे चश्मे आलम से छुप जाने वाले

मैं मुजरिम हूं आका मुझे साथ लेलो
कि रस्ते में है जा बजा थाने वाले

हरम की जमीं और कदम रख के चलना
अरे सरका मौका है ओ जाने वाले

तेरा खाएं तेरे गुलामों से उलझें
हैं मुन्किर अजब खाने गुर्राने वाले

रहेगा यूं ही उनका चरचा रहेगा
पड़े खाक हो जाएं जलजाने वाले

अब आई शफाअ़त की साअत अब आई
ज़रा चैन ले मेरे घबराने वाले

रज़ा नफ्स दुश्मन है दम में न आना
कहाँ तुमने देखे हैं चंदराने वाले

नात शरीफ

सुब्ह तैबा में हुई बटता है बाड़ा नूर का
सदका लेने नूर का आया है तारा नूर का
बागे तैबा में सुहाना फूल फूला नूर का
मस्त बू हैं बुल बुलें पढ़ती हैं कलमा नूर का
आइ बिदअत छाई जुलमत रंग बदला नूर का
माहे सुन्नत मिहरे तलअत लेले बदला नूर का
मैं गदा तू बाद शाह भर दे प्याला नूर का
नूर दिन दूना तेरा दे डाल सदका नूर का
बारवीं के चाँद का मुजरा है सजदा नूर का
बारह बुर्जों के झुका एक इक सितारा नूर का
ऐ रज़ा यह अहमदे नूरी का फैजे नूर है
हो गई मेरी गज़ल बढ़कर कसीदा नूर का

क़तआ

अल्लाह की सरताबा क़दम शान हैं यह
इन्सां नहीं इनसान वह इनसान हैं यह
क़ुरआन तो ईमान बताता है इन्हें
ईमान यह कहता है मेरी जान हैं यह

नात शरीफ़

पेशे हक़ मुज़दा शफाअत का सुनाते जाएंगे
आप रोते जाएंगे हम को हंसाते जाएंगे
दिल निकल जाने की जा है आह किन आँखों से वह
हम से प्यासों के लिये दरिया बहाते जाएंगे
वुसअतें दीं हैं खुदाने दामने महबूब को
जुर्म खुलते ज़ाएंगे और वह छुपाते जाएंगे
लो वह आए मुस्कुराते हम असीरों की तरफ
खिरमने इसियां पे अब बिजली गिराते जाएंगे
हश्र तक डालेंगे हम पैदायशे मौला की धूम
मिस्ले फ़ारिस नज्द के किले गिराते जाएंगे
गुल खिलेगा आज यह उनकी नसीमे फैज़ से
खून रोते आएंगे हम मुरूकुराते जाएंगे
कुछ ख़बर भी है फक़ीरो आज वह दिन है कि वह
नेमते ख़ुल्द अपने सदके में लुटाते जाएंगे
सरवरे दीं लीजे अपने नातवां की ख़बर
नफस व शैतां सय्यदा कब तक दबाते जाएंगे
ख़ाक हो जाएं अदू जल कर मगर हम तो रज़ा
दम में जब तक दम है ज़िक्र उनका सुनाते जाएंगे

नात शरीफ़

अर्शे हक़ है मसनदे रिफअत रसूलुल्लाह की
देखनी है हश्र में इज़्ज़त रसूलुल्लाह की
क़ब्र में लहराएंगे ता हश्र चश्मे नूर के
जलवा फरमा होगी जब तलअत रसूलुल्लाह की
लावो रब्बुल अर्श जिसको जो मिला उनसे मिला
बटती है कौनैन में नेमत रसूलुल्लाह की
सूरज उलटे पावँ पलटे चाँद इशारे से हो चाक
अन्धे नजदी देखले कुदरत रसूलुल्लाह की
अहले सुन्नत का है बड़ा पार असहाबे हुजूर
नज्म हैं और नाव है इज़्ज़त रसूलुल्लाह की
तुझसे और जन्नत से क्या मतलब वहाबी दूर हो
हम रसूलुल्लाह के जन्नत रसूलुल्लाह की
हम भिकारी वह करीम उनका खुदा उनसे फुजूं
और न कहना नहीं आदत रसूलुल्लाह की
वह जन्नम में गया जो उनसे मुसर्तनी हुआ
है ख़लीलुल्लाह को हाजत रसूलुल्लाह की
ऐ रज़ा खुद साहिबे कुरआं है मद्दाहे हुजूर
तुझसे कब मुमकिन है फिर मिदहत रसूलुल्लाह की

नात शरीफ़

रूखे दिन है या मेहरे समां यह भी नहीं वह भी नहीं
शबे जुल्फ या मुश्के खुता यह भी नहीं वह भी नहीं
मुमकिन में यह कुदरत कहाँ वाजिब में अवदीय्यत कहाँ
हैरां हूँ यह भी है ख़ता यह भी नहीं वह भी नहीं
हक़ यह कि हैं अवदे इला और आलमे इमकां के शाह
बर जुख़ हैं वह सिर्रे खुदा यह भी नहीं वह भी नहीं
बुलबुल ने गुल उनको कहा क़मरी ने सरवे जांफिज़ा
हैरत ने झुझंला कर कहा यह भी नहीं वह भी नहीं
ख़ुर्शीद था किस ज़ोर पर क्या बढ़के चमका था क़मर
बेपरदा जब वह रूख़ हुआ यह भी नहीं वह भी नहीं
डर था कि इसयां की सज़ा यां होगी या रोज़े जज़ा
दी उनकी रहमत ने सदा यह भी नहीं वह भी नहीं
कोई है नाज़ां जोहुद पर या हुस्ने तौवा है सिपर
यां है फकत तेरी अता यह भी नहीं वह भी नहीं
दिन लहु में खोना तुझे शब सुब्ह तक सोना तुझे
शरमे नबी खौफे खुदा यह भी नहीं वह भी नहीं
रिज़के खुदा खाया किया फरमाने हक़ टाला किया
शुकरे करम तरसे सज़ा यह भी नहीं वह भी नहीं
है बुलबुले रंगी रज़ा या तूती-ए-नग़मा सरा
हक़ यह कि वासिफ है तेरा यह भी नहीं वह भी नहीं

मुस्तफा जाने रहमत पे लाखों सलाम

मुस्तफा जाने रहमत पे लाखों सलाम
शमे बज़्मे हिदायत पे लाखों सलाम

शहरे यारे इरम ताजदारे हरम
नौ बहारे शफाअत पे लाखों सलाम

हम गरीबों के आका पे बेहद दुरूद
हम फकीरों की सरवत पे लाखों सलाम

जिस सुहानी घड़ी चमका तैबा का चाँद
उस दिल अफरोज़ साअत पे लाखों सलाम

जिसके माथे शफाअत का सहरा रहा
उस जबीने सआदत पे लाखों सलाम

वह जुवा जिसको सब कुन की कुनजी कहें
उसकी नाफिज़ हुकूमत पे लाखों सलाम

जिससे तारीक दिल जग मगाने लगे
उस चमक वाली रंगत पे लाखों सलाम

जिसकी तस्कीं से रोते हुए हंस पड़े
उस तबस्सुम की आदत पे लाखों सलाम

उनके मौला के उन पर करोड़ों दुरूद
उनके अस्हाबो इतरत पे लाखों सलाम

कितने बिखरे हुए हैं मदीने के फूल
करबला तेरी किस्मत पे लाखों सलाम

गौसे आज़म इमामुत्तुका वन्नुका
जलव-ए- शाने कुदरत पे लाखों सलाम

हिन्द के बादशाह दीन के हो मोईन
ख्वाजा-ए-दीनो मिल्लत पे लाखों सलाम

एक मेरा ही रहमत में दावा नहीं
शाह की सारी उम्मत पे लाखों सलाम

काश महशर में जब उनकी आमद हो और
भेजें सब उनकी शौकत पे लाखों सलाम

मुझसे खिदमत के कुदसी कहें हां रज़ा
मुस्तफा जाने रहमत पे लाखों सलाम

फ़रोग़े अहले सुन्नत के लिए इमाम अहले सुन्नत का दस निकाती प्रोग्रम

(1) अ़ज़ीमुश्शान मदरसे खोले जाएँ, बाक़ायदा त़ालीमें हों।

(2) त़लबा को वज़ाइफ़ मिलें कि चाहे न चाहे शौक़ पैदा हो।

(3) मुदर्रिसों की ज़्यादा तनख़ाहें उन के कामों पर दी जाएँ।

(4) त़लबा की तबियत की जाँच हो और जो जिस काम के ज़्यादा मुनासिब देखा जाए माक़ूल वज़ीफ़ा देकर उस में लगाया जाए।

(5) उन में जो तैयार होते जाएँ तनख़ाहें देकर मुल्क में फैलाए जाएँ ताकि तहरीरन (लिखत) तक़रीरन (अमलन) वाअज़न (ज़ुबानी) और मुनाज़रे से इश़्अते दीन व मज़हब करें।

(6) हिमायते मज़हब और बदमज़हबों के रद में मुफ़ीद कुतुब व रसाईल मुसन्निफ़ों को नज़राने देकर तसनीफ़ कराए जाएँ।

(7) तसनीफ़ शुदा और नौ तसनीफ़ रसाईल उम्दा और ख़ुश ख़त छापकर मुल्क में मुफ़्त तक़सीम कराए जाएँ।

(8) शहरों शहरों आपके सफ़ीर निगराँ रहें जहाँ जिस क़िस्म के वाइज़ या मुनाज़िर या तसनीफ़ की हाजत हो आप को इत्तला दें। आप सर कोबीए आदा के लिए अपनी फ़ौजें, मेगज़ीन और रिसाले भेजते रहें।

(9) जो हम में क़ाबिलकार मौजूद और अपनी मआश में मशग़ूल हैं। वज़ाइफ़ मुक़र्रर करके फ़ारिगुल बाल बनाए जाएँ और जिस काम में इनहे महारत हो लगाए जाएँ।

(10) आपके मज़हबी अख़्बार शाया हों और वक़्तन फवक़्तन हर क़िस्म के हिमायते मज़हब में मज़ामीन तमाम मुल्क में बक़ीमत व बिलाक़ीमत रोज़ाना या कम अज़ कम हफ़्तेवार पहुँचाते रहें।

हदीस का इरशाद है कि "आख़री ज़माने में दीन का काम भी दिरहमो दीनार से चलेगा" और क्यों न सादिक़ हो कि सादिक़ो मसदूक़ सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का कलाम है।

(फ़तावा रज़विया जिल्द 12 पेज 133)

Raza Academy
26, Kambekar Street, Mumbai-3
Ph.: 022- 56342156